ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

अप्रैल 2023, वर्ष 7, अंक 1

पीपर पात झरि गइले हो रामा...

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518
CNS
Network Services
CompuNet Solution
COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING
GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),

♦ **कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ** ♦♦ **स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से** ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

आपन बात–डॉ रजनी रंजन /5

• धरोहर

गुहार – गोरख पाण्डेय/6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

सामाजिक आ राजनीतिक विद्रूपता के खिलाफ स्वर–गोरख के गीत–कनक किशोर/10–14

सम्राट अशोक सबसे पहिले कल्याणकारी अर्थशास्त्र के सिद्धान्त देले रहलें–धनंजय कटकैरा/24

केदार पाण्डेय से बाबा रामोदर दास आ फेर राहुल सांस्कृत्यायन कइसे बन गइलें राहुल बाबा–मनोज भावुक/35–37

मामा के हरजाई सपना आ उनकर सुख आ बिछोह– डॉ बलभद्र/39–40

भोजपुरिया स्वर में चइता के लहर – केशव मोहन पाण्डेय/44–45

धरती के बचावे खातिर जन भागीदारी आज जरुरी बा–लाल बिहारी लाल/46

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

पुअरा–रामसागर सिंह 'सागर'/7–8

दहेज–राजू साहनी/9–10

चिंता मत करीह, तेज– डॉ अमरेन्द्र मिश्र/28–31

बुछिया– सविता गुप्ता/32

धंधा– अंकुश्री/37

• कविता/गीत/गजल

राजनीति कै इहै पहाड़ा–योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/15

गीत– कृष्ण देव 'घायल'/15

गीत–राकेश कुमार पाण्डेय/16

गजल–अजय साहनी/16

चइता– गीता चौबे 'गूंज'/17

चाँद कहवाँ छुपल–आनंद कुमार पाण्डेय/17

कइसे के जोड़ीं दइया उमिरि उमिरिया से –रामरक्षा मिश्र विमल/18

गजबे सोच जवान भइल–देवेन्द्र कुमार राय/18

• कविता/गीत/गजल

मुँह मारो कमाई के– दीपक तिवारी/19

जिनगी कवने घाटे–केशव मोहन पाण्डेय/19

पिया नाही अइलें–केशव मोहन पाण्डेय/20

पिया निरमोहिया– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/20

बोलै उ आपन गाँव कहाँ बा–संजय कुमार ओझा/21

सरजू माई से एगो अरज–नीरज जयसवाल/21

हृदय से बंदन बा– रामसागर सिंह 'सागर'/23

छूटल नइहर– सविता गुप्ता/23

उहाँ के नाम– शालिनी कपूर/32

चइता– सरोज त्यागी/33

सौतन भइल बा मंहगाई– डॉ रामबचन यादव/33

बिनु रे पनहियाँ– डॉ सुशीला ओझा/34

हाय रे करम– कैलास नाथ शर्मा 'गाजीपुरी'/38

आई गइलें चौत महीनवां–छाया प्रसाद/38

सुधि– दिनेश पाण्डेय/41

चउकठ–रीना सिन्हा/41

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

'चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंहः इयादों के झरोखा में ' एक नजर– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/25–27

संस्मरण

जे माहुर पियेला उहे पगला नीलकंठ होला–जनक देव 'जनक'/22

उ बचपन के दिन बड़ा ईयाद आवेला– मीनाधर पाठक/42–43

अनूदित साहित्य

एगो रहलें भर्तृहरि– डॉ रजनी रंजन/34

स्माचार

नेपाल भाषा आयोग के अध्यक्ष भोजपुरी में सपथ लीहलें/40

आपन बात

ईश्वर की सृष्टि के साथ मिले, त तनाव दूर होखे के सथहीं रचना में इहे आदमी के मूड के बेहतर करे के रसायनो बन जाला। ई हमनी के शरीर के कोशिका सभन के पोषितो करेला। मानसिक स्वास्थ्य खातिर ई एगो टॉनिक हो खेला। एहसे ऊर्जा, ताजगी, चैतन्यता के साथे जीवनशक्ति बढ़ जाला। प्रकृति के रचना के संग सुकूं आ शांति मिलेला जेह से तनाव आ चिंता दूर हो जाला आ सोच सकारात्मक दिशा के साथ कुछ नया करे खातिर प्रेरित करेला।अइसहीं सभ त्योहार के आपन परंपरा होखेला। संबंधित जन–समुदाय एकरा में एक साथ भाग लेवेला । त्यौहार सब जनमानस के एकता में बाँधे में सफल करावेला। एही से जीवन में त्योहारन के बड़ी महत्व होला।

चैत महीना राम जी के जन्म के महीना ह।उत्तर प्रदेश और बिहार के लोकगीतन में चइता सुंदर राग के एगो अनुपम पहचान बा। राम जी के जनम, प्रकृति के सुन्नर रूप आ दिन के गर्मी से बेकल मनके अकुलाहट ओकरे साथे बढ़त रात में एकाकी मन के ब्याकुलता ई दुनों मिलन आ बिछुडन के रागात्मक चित्रण चइता में मिलेला। ई गीत चइत के महीना में गावल जालें। कई जगह पर चैता उत्सव के आयोजन भी कइल जाला। मिथिला क्षेत्र में एकरा के चइती कहल जाला। चइता आ चाहे चइती दुनो एकही विधा ह। फागुन के पसरल रंग अचके गरम घाम में कहाँ बिला जाला। सब चइत के विषय ह जे चित्त के दशा के व्यक्त करेला।सतुआन परब इहे महीना के तेवहार ह। सतुआ के सोन्ह गंध ,आम के चटनी के मुंह पनीआइल खटतुरुस स्वाद, गुड़ के मीठा स्वाद आ एही में गँवइ परिवेश में कुलदेवता के माध्यम से प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करे के ई परब ह जे समाज के कहनियन में महत्वपूर्ण स्थान रखेले।

एगो आउर बात, बाबासाहेब आंबेडकर के जयन्ती हमनी के देश आ कानून के प्रति समर्पण के भी एगो अनुपम मौका मिलल बा।

त आईं सभे, मिलजुल के देश आ समाज के सब संदेश आ आपन सभ्यता और संस्कृति से सब जनमानस के बतावल जाव। सभे के आपन माईभाखा में लेखनीबद्ध करके एकरा के लिखित धरोहर बनावल जाय।

■■

डॉ रजनी रंजन
सहायक सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

गुहार

सुरु बा किसान के लड़इया चल तूहूँ लड़े बदे भइया।
कब तक सुतब, मूँदि के नयनवा
कब तक ढोवब सुख के सपनवा
फूटलि ललकि किरनिया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया
सुरु बा किसान के लड़इया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।

तोहरे पसीवना से अन धन सोनवा
तोहरा के चूसि–चूसि बढ़े उनके तोनवा
तोह के बा मुठ्ठी भर मकइया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।
सुरु बा किसान के लड़इया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।

तोहरे लरिकवन से फउजि बनावे
उनके बनूकि देके तोरे पर चलावे
जेल के बतावे कचहरिया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।
सुरु बा किसान के लड़इया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।

तोहरी अंगुरिया पर दुनिया टिकलि बा
बखरा में तोहरे नरके परल बा
उठ, भहरावे के ई दुनिया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।
सुरु बा किसान के लड़इया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।

जनमलि तोहरे खून से फउजिया
खेत करखनवा के ललकी फउजिया
तेहके बोलावे दिन रतिया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।
सुरु बा किसान के लड़इया, चल तूहूँ लड़े बदे भइया।

■■

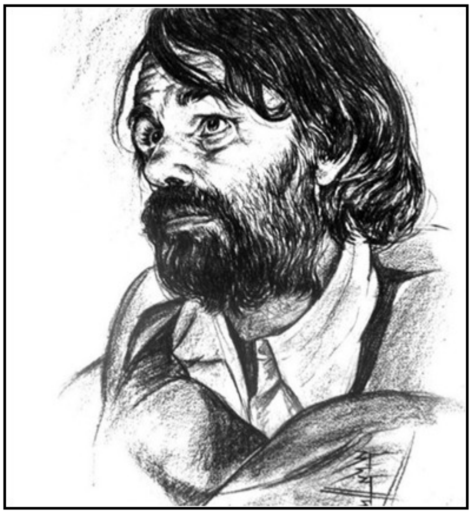

गोरख पाण्डेय
जन्म– 1945

मृत्यु– 29 जनवरी 1989

पता– ग्राम 'पंडित के मुंडेरवा', जिला देवरिया, उत्तर प्रदेश, भारत

पुअरा

रामसागर सिंह "सागर"

आसमान से हल्का बुंदाबुंदी, चौपाई बयार के संगे पुस के महीना अंतिम चरण में रहे! लगभग दस दिन से सुरुज महाराज कबहूँ कुहासा त कबहूँ बदरी से तोपाइल,धरती पर आपन नजर ना फेरले रहले! हाड़ कंपावे वाला ठंड़ी के असर नवका लोग के भी जेकर खून अभीन गरम बा, रजाई में लुकाये के मजबूर कर देला त सोचीं जे पुरान हो गइल बा ओकर का हाल होई?

नटवर के माई घर के ओसारा में एगो कोना पलास्टिक के चटाई पर बिछावल दोहरा बिछावन पर बइठ के थर थर कांपत रहली! ओढ़े के त उ विदेश से आइल अरबियन कामरा ओढ़ले रहली, बाकिर पुरनिया देह खातिर उहो कामरा साइत कम पड़त रहे! उ मने मन इहे सोंचते रहली कि पलानी, से खपरैल ले, फेरु जब खपरैल से छत वाला मकान भइल तबहुं जिनगी में अइसन ठंढी कबहूँ ना आइल रहे! का जाने इ हमरा उमिर के दोस बा कि सांचो एतना हाड़ कंपावे वाला ठंढी आइल बा!

पहिले के समय में गाँव आजु के जइसन ना रहे! गाँव गाँव में जाड़ा के दिन में सभका दुआरा पर घुर, आउर बहिन महतारी खातिर आंगन में बोरसी के जरुर बेवस्था रहे! आपन छोटा मोटा काम ओरवाई के सभे घुर चाहे बोरसी के चारो ओर गोलाईं में बइठ के ठंढी भगावे! ओढ़ना के नाम पर पुरान धोती साड़ी के तहिया के, मोटका डोरा से सीयल गुदरी ही ओह समय के रजाई रहे! असली रजाई त केहुवे केहुवे के घरे रहे!

केहु केहु के घरे पिटुआ कामरा(कंबल) भी रहे जवन भेड़िहार भाई लोग भेंड़ी से उन काट के बनावे लोग! ठंढ़ी भगावे खातिर घर के कवनो कोना में जमीन पर बिछल पुअरा पेठारी आउर ओइपर बिछावन के नाम पर कलकतिया जूट के बोरा जवन कवनो पुरान धोती चाहे लुगा से ढ़काइल रहे! कुस चाहे पेठारी से बनल चटाई भी ठंढी में बिछावना के काम करे! बाकिर जवन भी साधन रहे ओइसे लोग आपन ठंढी जइसे तइसे काट लेव!

अब त गांव पहिले के गांव से बहुत आगे निकल गइल! अब मड़ई, पलानी त खतम होखे के किनारा बा! गांवे गांव बहुते लोग के पक्का मकान, रजवाड़ी गेट, बिजली, पंखा, फ्रीज, हिटर, टी. वी. सब लाग गइल! घर के फर्श पहिले माटी से पलास्तर आउर अब मार्बल, टाइल्स आउर महंगा पत्थर के जुग ले आ गइल!

नटवर भी जब से सउदी कमाये लगले पुरान घर तुड़वा के चकाचक नवका स्टाइल के घर बनवा लिहले! घर में सारा सहुलियत के सामान लाग गइल!

घर में चूना के जगह व्हाइट पुटी और सिमेन्ट और ओकरा उपर पसंद के रंग के पेन्ट पोताइल! फर्श पर टाइल्स के जगहा सफेद संगमरमर के पत्थर लागल! कुल मिलाके उनकर घर कवनो शहर के बंगला से कवनो कोना से कम ना रहे! कमी रहे त इ रहे कि ओ घर में माई खातिर कवनो जगहा ना रहे! गिन गुंथ के जय गो घर बनल रहे नटवर, आउर उनका बेटन के हिसाब से बनल रहे! घर के घरभोज होते ही सभे आपन आपन कोठरी छेंका लिहले! ना नटवर इ सोचले कि माई कहाँ रहीहें ना उनका लरिकन के कवनो आपना इया के कवनो फिकिर रहे!

पुस के ओह ठंड़ी में नटवर के माई के बिछावना बहरी ओसारा में हो गइल! संगमरमर के पत्थर के फर्श पर पलास्टिक के चटाई के उपर एगो दरी नियन मेंही गुदरी बिछा के सउदी से आइल कामरा दे के माई के सुता दियाइल! जवन संगमरमर के सफेद पत्थर घाम में भी ठंढे रहेला उ पुस के ठंढ़ी रात में का रंग देखावत होई? सुतते फर्श आपन रंग देखावे लागल! जइसे तइसे आँख लागल बाकिर अधरतिया के पहिलहीं आँख खुल गइल! नीचे से चटाई गुदरी सब पाला हो गइल रहे! उ सउदी वाला कामरा के बगल वाला भाग करवट ले के नीचे दबवली! कुछ आराम मिलल बाकिर तनिक देर बाद फेरु उहे पाला लागे लागल! रात भर जइसे तइसे उखी–बिखी में बितल!भोर होते होते फर्श के बिछावन त बिछावन ह सउदी वाला कामरा भी बुझाव की बरफ हो गइल बा! उ उठ के बइठ गइली! बिछावन पर एगो कोना गुटियाके देह गरम करे के कोशिश में लाग गइली! बाकिर ना उनके देह के दलदली कम होखे ना उनकर दाँत कटकटाइल!

सुबह नटवर जब अंदर से बाहर अइले, माई के दशा देखके फटाफट घर से एगो आउर कामरा लियाके निमन से ओढ़ा दिहले! देह के आराम

मिलल! जइसे तइसे दिन बितल, गदबेर हो गइल! नटवर के माई के आपन रात वाला दुरदासा बिसरत ना रहे! उ आपना बेटा नटवर के बोला के कहली....

"ए बाबु, निचवा बड़ी पाला लागत बा, ना होखे त एह कोनवा तनी पेठारी बिछवा के खटियवा से आड़ कर दिहत! नीचे से हई पत्थरवा पाला लागत बा आउर उपर से सुपुहा मार के इ कामरा पाला क देता! "

" का माई? तुहुं अजबे बात करेलु! अतना मँहगा पत्थर फर्श पर पुअरा पेठारी बिछावे के लागल बा! जब पुअरे पेठारी बिछावे के रहीत त इ बनवावला के का फायदा! तनी तुहीं बताव॰, लाखो रुपिया लगवाके इ पत्थर लगवअले बानी,खटिया खड़ा कर के इहाँ आड़ कइल जाई , जब खटिया एने ओने खिंचाई त एतना महँगा पत्थर खराब ना होई? "

नटवर के माई के तब बुझाइल कि उ केतना कम किमती बाड़ी! नव महिना पेट में ढो के, सगरी दरद पीरा सह के वंश जनमावल जाला! ना जाने कवन कवन सपना मार के लरिकन के पोसल जाता, बाकिर उहे लरिका जवान होके सब निक लिप देत बाड़े सन! बाप महतारी के बुढ़ारी बोझा लागे लागता! नटवर के माई के बुझा गइल कि लरिकाई में खिंच खिंच के आंचर ओढ़े वाला नटवर खातिर अब उ काम के चीज नइखी रह गइल!

"ना ए बाबु.. हम तो एह से कहनी ह कि पछुआ हलकोरा मारत बा, लागत बा कि लाद में ठंढ़ी मार दी! "

" ना माई! पत्थर पर पुअरा थोड़े बिछी! एगो कामरा अउरी ले लिह, ठंढ़ी ना लागी!

नटवर के माई "ठीक बा" कह के चुप हो गइली! रात के खाना खइला के बाद सभे अपना अपना घर में सुते चल गइल! नटवर के माई के एगो अउरी कामरा दिया गइल! उ तीन तीन गो कामरा ओढ़ के सुत गइली! पछुआ आपना पुरा रंग में रहे! ओढ़ना आउर पछुआ में वर्चस्व के लड़ाई होत रहे! आखिर ओढ़ना पर पछुआ भारी परे लागल! पछुआ अब कामरा के महीन छेदानी से पार होके नटवर के माई के शरीर छेदे लागल! उ उठ के बइठ गइली! ठंढी छाती में समा गइल रहे! देह काँपे लागल, पेट दलदलाए लागल, दाँत कटकटाये लागल! उ केतने बार कोशिश कइली कि देह ना हिलो, दाँत जनि कटकटाव, बाकिर बार बार के कोशिश नाकाम भइल! उ एक बेरी फेरु से तीनों कामरा देह में लपेट के ओठंग गइली!

पछुआ आउर ओढ़ना के लड़ाई अब ठंढ़ी आउर नटवर के माई के लड़ाई में बदल गइल रहे! ठंढ़ी उनके हिलावे कंपकंपावे के फेर में रहे, उ अपना के ना हिले देवे के लड़ाई लड़त रहली! आखिर धीरे धीरे उ आपन गोड़ लंबा कर के कामरा में गुटिया के सुत गइली!

बिहान होते नटवर घर से बाहर निकलले! देखले के माई आराम से गोड़ लंबा कर के सुतल बाड़ी! नटवर ओसारा से बाहर निकल के गांव के गुमटी पर कुछ लेवे चल गइले! लगभग एक घंटा बाद उ घरे पहुंचले त माई ओसहीं टंगरी लंबा कर के सुतल रहली! मने मन उ सोंचले कि माई तीन गो कामरा पाके आज आराम से सुतल बिया! उ आवाज दिहले...

"माई...! ए माई, उठ॰ बिहान हो गइल!"

माई कुछउ ना बोलली! उ फेरु आवाज दिहले...

" ए माई, उठ॰ ना... आजु तिन गो कामरा मिलल बा त आराम से सुतल बाड़ु! कहुवीं नु कि एगो अउरी कामरा ले ल.. ठंढी ना लागी! "

माई फेरु कुछउ ना बोलली!

नटवर आगे बढ़ के माई के जगावे खातिर कामरा खिंचले! " माई उठ॰... "

एगो कामरा उनका हाथ में आ गइल! माई ना हिलली! उ घबरा के फेरु ओढ़ना जोर से पकड़ के खिंच ले... "ए माई.. उठ॰ ना.. "

पुरा ओढ़ना उनका हाथ में आ गइल! माई ना हिलली! अब जवन सोझा रहे उ देख के नटवर अवाक रह गइले! माई के दाँत पर दाँत कसाइल रहे, आँख बन्द रहे, हाथ खुलल रहे, नाक से एक दू बूंद खून चु के जम गइल रहे! नटवर के माई ठंढ़ी से आपन लड़ाई हार गइल रहली!

नटवर अब दहाड़ मार मार के माई माई कह के रोवे लगले! उनका लरिकाईं से लेके अभिन तक के सब बात इयाद परे लागल! जिनगी में जवन मिलल माई के आशीर्वाद से मिलल! बाकिर अफसोस....!

कुछ देर बाद नटवर काँच बाँस से बनल पचाठी पर माई के लाश खातिर पुअरा बिछावत रहले! काश.. इ पुअरा एक दिन पहिले उ संगमरमर के पत्थर पर बिछा देले रहते त एतना जल्दी आजु पचाठी पर ना बिछावे के पड़ीत!

सिवान, बिहार

दहेज

राजू साहनी

दहेज समाज में एगो केंसर के तरह बा जवन केतना परिवार मार देहलस ,केतना बहिन बेटी मारल आ जारल जात बाड़ी खाली दहेज लोभी न के चलते। आज निमन पतोह मिले ना मिले बाकिर दहेज निमन मिले के चाही , काहे कि सबके धन प्यारा बा । चाहे कन्या पक्ष वाला बिका जा बाकिर वर पक्ष वाला के दहेज चाही ता चाही ।

देखी रामपुर के बाती ह एगो मध्यम वर्गीय परिवार के सोहन जी के घर के जेकर एगो लड़की रहे, जेकर नाम रेशमी रहे ।

सोहन जी अपना एकलोती बेटी के बड़ा लाड प्यार से पालन पोषण करा अउर रेशमी के बात कबो ना टालस , ऊ जवन कह तवन तुरंत पूरा करस । बेटी के सपना रहे की डॉक्टर बनी ,अब डॉक्टर बनावे के सपना पूरा करे खातिर दिन रात एक का दिहले राहलन , आपन खेत बारी बेच दिहालन घर गिरवी र ख दिहलन ।

बेटी के पढ़ावे के खातिर डॉक्टर बनावे खातिर बकिर रेशमी अब जवान हो गइल अउर जवान बेटी हो जाले ता बाप के ओंघी ना लागेला ।

अब सोचले की बेटी बड़ हो गईल सादी करे योग्य हो गईल बा ता कावनो निमन घर वर खोज के बियाह कदी ।

तबले एगो पंडित जी आईले आ पूछले की सोहन बाबू अपने लड़की के शादी करबा बहुत निमन परिवार बा बहुत शिक्षित वर बा डॉक्टर ह , सोहन पूछले की कवना गांव में घर बा बताई ?

तब पड़ित जी कहले की बगले गांव में बा ठगई सेठ नाम ह लड़का के बाप के बहुत धनी मनी आदमी हवे जेकर एकेगो लइका बा उहो डॉक्टर ह। तब सोहन कहले की चली चलल जाव आ रिश्ता तय क दिहाल जाव पंडित जी कहले चला अब सोहन पंडित जी के साथै लिया के ठगई सेठ के द्वार प पहुचले ।

आ राम रहारी भईल पंडित जी रिश्ता के बात छेड़ दिहले ता ठगई सेठ बड़ी लालची रहले ता मने मने सोचले की इकलौती लड़की बा आ शादी के बाद पूरा जर जमीन हमर हो जाई इहे सोचते रिश्ता पक्का का दिहले ।

जब बियाह के दिन नियरा गइल रहे , अउर तिलक चढ़े के दिन आ गईल तिलक भी चढ़ गइल तब ठगई सेठ सोहन से कहले की हम दस लाख रुपया अउर एगो चारचका लेब तवे बारात लेके आईब ना ता बियाह ना होई ! सोहन कहले की ई का कहतानी अगर राऊआ बारात लेके ना आइब ता हमर इज्जत चल जाई आईसन जुलुम मत करी दया करी एगो बाप प , रऊआ बियाह करी हम आपके पाई पाई चुका देब ईहे कह के रोवे लगालन अउर पगड़ी उतार के उनका गोडे प रख दिहालन बकीर ठगई सेठ कुछ ना सुनले सोहन से कहले की मुफ्त में डॉक्टर दामाद ना न मिली ,अगर दहेज के पईसा के दू दिन में ना मिलल ता शादी ना होई ठीक न अब जा ।

अब सोहन घरे आईलन ता देखालन की बियाह के खुशी में बेटी मुस्कियात बा अउर पानी पिए के देत बा ,अब मन के बात मन में ही दबा लिहालन अउर सोचलन की बियाह ना होई ता रेशमी एकदम टूट जाई ।

अब बड़ा दुविधा में पड़ गईलन एक ओर बेटी के खुशी आ दूसरी ओर दहेज के गम मने मन विचार कइलन की बेटी के खुशी खातिर अगर हम मर जाई तबो कवनों बात ना बा , सोहन सोचलानकी किडनी बेच दी आ जवन रुपिया मिली ओहसे हो जाई दहेज के इंतजाम अउर खूब धूम धाम से शादी करब अपना रेशमी के ।

ईहे सब विचार करत एगो हॉस्पिटल में गईलान अउर पुछलन की किडनी वाला डॉक्टर के ह , जे पर्ची लगावत रहे ऊ कहले की चाचा केबिन नंबर दस में डॉक्टर रमेश बईठे न उनही से जाके पुछला सोहन कहना ठीक बा बेटा हम जाके पुछलेब

डॉक्टर रमेश पूछलन की बोलिए क्या परेशानी है ? सोहन कहलन डॉक्टर साहब हमके आपन किडनी बेचे के बा केतना रुपिया मिली ?

डॉक्टर रमेश आश्चर्य से पुछलान किडनी बेचेंगे ओभी इस उम्र में क्यू क्या समस्या है बताइए सोहन के आंख से आंसू आ गइल कहले की बेटी के बियाह करे खातिर दहेज देबे खातिर हम आपन किडनी बेचत हई बेटा डॉक्टर रमेश जब ई बात सुनले ता बहुत गुस्सा भईले आ पूछे लागले की रिश्ता कहा तय भईल बा केतना

लोभी और दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति बा ऊ लोग जे येतना दहेज मांगता ।

सोहन बतावलन की डॉक्टर साहेब उनके नाम ठगई सेठ ह अउर उनके लाइका डॉक्टर ह उनहि के घरे जब डॉक्टर रमेश ई बात सुनालन ता पैर तले जमीन खिसक गइल आ निशब्द हो गइल कुछ ना बोलत हावे चुप चाप एकदम सन्न अवस्था खड़ा हवे अपना बाप के नाम सुनिके आंख डभड़भा गइल ,सोहन सोचे लगले की कुछ गलत ना न बोल दिहली हई जे डॉक्टर साहेब के बुरा लग गईल स

डॉक्टर रमेश कहले की हम ही ऊ अभागा लाइका हई जेकर बाप एगो बाप के किडनी बेचे प मजबूर क दिहालस खाली झूठी शान खातिर अपने लाइका के घर वसावे खातिर आज केहू अउर के घ र उजाड़ल निमन ना न ह ।

आप हमरे नजर में बहुत महान बानी जे अपना बेटी के घर बसावे खातिर आपन किडनी भी बेचे के तैयार बानी एगो हमर बाप । डॉक्टर रमेश सोहन के लिया के अपने घरे गईलन आ अपने बाप से कहलान की जब ई आपन सबसे बड़ दौलत आपन बेटी हमन के देत बाना ता का होई ई रुपिया पईसा लेके

ठगई सेठ का कहलन की अगर हम दहेज न देब समाज आ बिरादरी के लोग उपहास उड़ाई की कुछ मिलबे ना कईल बहुत बेईजती होई बेटा आजकल दहेज लेबल गर्व के बात बा ,डॉक्टर रमेश कहलन दहेज में केहू किडनी देई ता लेबा अगर ह लेल इनके किडनी आ खूब गर्व महसूस करा बाकिर हम ई पाप ना करब ।

जब ठगई सेठ ई बात सुनलान ता बहुत पस्तावा भईल अउर कहलन हम जग के दहेज रूपी कुप्रथा के अउर झूठी शान के चक्कर में अंधा हो गईल रहनी ह हमके माफ कदी सोहन जी हमारा दहेज कुछ ना चाही हम बारात लेके आईब समधी जी आई गले लगी । सोहन आ ठगई सेठ हसीं के गले मिलालन अउर मुंह मीठा कईल लोग डॉक्टर रमेश कहलन की पिता अब तो समाज की कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास कीजिए ।

अब सोहन के खुशी के ठिकाना न रहल अउर ऊ डॉक्टर रमेश जईसन दामाद पाके खुशी से झूमे लागलन ।

❑❑

❍ ग्रा०/पो०:– मदनपुर
जिला :– देवरिया (उ०प्र०)

कनक किशोर

सामाजिक आ राजनीतिक विद्रूपता के खिलाफ स्वर: गोरख के गीत

गोरख यानी गोरख पाण्डेय।हँ, उहे गोरख पाण्डेय जेकर गीत ' समाजवाद बबुआ, धीरे – धीरे आई ' आ ' नक्सलबाड़ी के तुफनवा जमनवा बदली ' गाँव के गली से दिल्ली के गलियारा तक अस्सी के दसक में गूंजत रहे। उहे गोरख पाण्डेय के गीतन पर हम इहाँ बात कइल चाहतानी। गोरख पाण्डेय के जीवन काल में उनुकर रचल गीत संग्रह' भोजपुरी के नौ गीत ' प्रकासित भइल रहे।एकरा अलावा जहाँ – तहाँ उहाँ के भोजपुरी रचना छपल रहे। श्री जीतेन्द्र वर्मा ' गोरख पाण्डेय के भोजपुरी गीत ' नाम से गोरख पाण्डेय के गीतन के संकलित कइले बाड़न ।ओह संकलन में गोरख पाण्डेय के इधर – उधर बिखरल रचनन के भरसक एक जगह ले आवे के सुंदर प्रयास कइल गइल बा। गोरख पाण्डेय के गीतन से गुजरला के बाद ओहनी के ' जागरण गीत ' के संज्ञा देल सर्वथा उचित होई।ग. ीतन के पहिला नजर में देखला से दू चीज सामने आवता। पहिला कि ऊ सब गीत बाति कर रहल बा आम जन, किसान, मजदूर के जीवन के विभिन्न प क्षन के सरल सुबोध उनुके भाषा में।उहो कवनो ना कवनो लोक प्रचलित धुन – रागि – फगुआ,सोहर, कजरी,झूमर, बारहमासा आदि में।दूसर बात गोरख के गीत समाज आ राजनीति के विद्रूपता पर करारा आ सोझि चोट करत आम जन के जगावे के कोसिसे नइखे करत ओकर व्यंग्य आ मारक क्षमता दिमाग झंझोरि के रख देवे के ताकत रखता।इहे दूनो कारण बा कि आम जन, किसान, मजदूर के जबान पर चढ़ि जबरदस्त लोकप्रिय भइल उहो खाली भोजपुरी क्षेत्रन में ना बलुक पूरा देस में।

जहाँ तक देसव्यापी लोकप्रियता के बाति बा एह से समझल जा सकेला कि एक बेरि प्रियंका दूबे, बीबीसी संवाददाता नर्मदा नदी पर बन रहल बाँधन के एगो विरोध प्रदर्सन के कवरेज खातिर मध्यप्रदेश के खंडवा जिला में जात रही त उनुका कान में विंध्याचल – मालवा क्षेत्र के सड़क पर गूंजत एगो भोजपुरी गीत के बोल सुनाई पड़ल।

ऊ गीत गोरख के रहे ' समाजवाद बबुआ, धीरे – धीरे आई ' , जेकरा के गावत नवही के दल चलल जात रहे।ओह घटना के एक साल बाद दिल्ली के जंतर – मंतर पर एगो विरोध प्रदर्सन में उनुका उहे गीत सुने के मिलल,जे उनुका के बाध्य कइलस गोरख पाण्डेय के गाँव जाके गोरख के जाने – समझे खातिर।

मुख्य रूप से पालन – पोषण वातावरण, आर्थिक आ सारीरिक शोषण, सामाजिक – राजनीतिक ताना – बाना के असर होला कि आदमी विरोध – विद्रोह के राहि पकड़ लेला।बाकिर इहो कहावत ह कि पूत के पांव पलने में पहचना जाला। मध्य वर्गीय समृद्ध बाभन परिवार में जनमल गोरख पाण्डेय के रहन – सहन, बात – विचार,सुभाव विरोध – विद्रोहि से शुरूआत से जुड़ल रहे, जेकर असर उनुकर रचनन पर खूब दिखलाई पड़ेला।गोरख के विरोध – विद्रोही सुभाव समाज से पहिले घरे में दिखलाई पड़ता,जे आगे चलके समाज आ आम जन के आवाज बनल।एक बेर दिल्ली में आपन जनेऊ तुड़के घरे अइला पर बाबूजी नाराज भइलन त गोरख साफ कहले कि ई धागा पहिर के दिन भर झूठ बोलत रहीं ई हमरा से ना होई, ई हमार संस्कार ना हऽ। सामाजिक आ पारिवारिक वर्जना कबो गोरख के ना बान्हि पावत रहे।गोरख होली में घरे जरूर जात रहन बाकिर गाँवे पहुंचते गरीब – दलित के टोला में जाके गीत गावत आ रंगे ना खेलत रहन,उन्हिनि के झोपड़ी में साथे बइठ के खाना खात रहन। अउर त अउर अपना बाबूजी के कहत रहन कि" एतना जमीन रखि का करबि ? काहे नइखीं बाँटि देत गरीब मजूरवन के बीच।सभके बराबर जमीन मिले के चाहीं।" अपने खेत में काम करत मजदूरन के भड़कावत कहस कि हमार बाबूजी के सब जमीन कब्जा कर लऽ लोगिन। समा. जवाद के लड़ाई गोरख गाँव आ घरे से शुरू कइल. न।गाँव आ माटी से जुड़ सामाजिक विद्रूपता के नजदीक से अनुभव कइले रहन गोरख।ओहि अनुभूतियन के शब्दन में गाँथिके गीत के रूप में विरोध के स्वर देलन।गोरख के विरोध – विद्रोह के भाषा देखावटी ना रहे। गोरख के बनारस छोड़ि दिल्ली जाय की पीछे अपना जीवन के लक्ष्य के सक्रियता प्रदान कइल रहे जे उनुकर डायरी में लिखल " मैं बनारस तत्काल छोड़ देना चाहता हूँ, तत्काल! मैं यहाँ बुरी तरह उब गया हूँ। विभाग, लंका, छात्रावास, लड़कियों पर बेहूदा बातें, राजनीतिक मसखरी।हमारा हाल बिगड़े छोकरों सा हो गया है। दिल्ली में अगर मित्रों ने सहारा दिया तो हमें चल देना चाहिए। मैं यहाँ से हटना चाहता हूँ।बनारस से कहीं और भाग जाना चाहता हूँ ", बाति कह रहल बा। गोरख के ई बाति गोरख के सोंच अउर संवेदनशीलता आ घुटन भरल वातावरण से निकल लक्ष्य के ओर जल्दी से बढ़े के द्योतक त बड़ले बा साथ ही अपना राहि से भटकल उनुका तनिको नइखे सुहात इहो कह रहल बा। गोरख भोजपुरी से अधिका रचना हिन्दी में कइले बाड़न बाकिर गोरख के उनुकर भोजपुरी में लिखल जनवादी गीतन के लोकप्रियता उनुका के जनकवि बनवलस,जे आजुओ विरोध के हथियार बनल बा आ आम जन के मुँहे पर रहेला। गोरख पाण्डेय सबसे अलग बाड़े ई समझे – बूझे खातिर उनुकर गीतन पर बात कइल जरूरी बा, आईं जनकवि गोरख के गीतन पर एक नजर डालल जाय।

गोरख के गीतन पर उनुकर खुद के आकलन :

पहिले गोरख पाण्डेय के आपन रचनन पर का विचार रहे इहो इहाँ जानल जरूरी बा काहे कि रचयिता कवनो मकसद, दृष्टिकोण, आँखिन देखल आ अनुभूतियन के नूं रचना के रूप देला। गोपाल प्रधान जी के सम्पादन में प्रकासित ' गोरख पाण्डेयः संकलित गद्य रचनाएँ ' किताब में जनसत्ता के 1985 के 8 सितंबर आ 13 अक्टूबर के अंक में छपल दूगो गोरख पाण्डेय के साक्षात्कार सामिल बा।ओह साक्षात्कार में गोरख एगो सवाल –गीत खास करके भोजपुरी गीत, लिखे के प्रेरणा कइसे मिलल – के जबाब में कहले बाड़न कि सन 68 में किसान – आंदोलन से जुड़नीं। ओहिजा हिन्दी में लिखल गीत – नवगीत के का जरूरत हो सकत रहे? हमरा आपन सब रचना बेकार होत दिखाई पड़ल तब हम ' नक्सलबाड़ी के तुफनवा जमनवा बदली ' जइसन गीत लिखली।बातो सही बा लोक के भाषा में रचले साहित्य लोक के रूचेला आ लोक में रचेला – बसेला। कविता के लेके आपन चिंता के बारे में बोलत गोरख कहलन कि आजु के कविता देस के आम जीवन के धारा से कटि के कुछ साहित्यकारन भा कुलीन लोगिन के बीच के चीज हो गइल बा जे चिंता के विषय बा।एह स्थिति में ऊ भारतीय जीवन – हलचल में सामिल होखे के भूमिका नइखे निभा सकत।हमार चिंता बा कि कविता के कइसे आम जन के जीवन आ ओकर आजादी के लड़ाई के वाहक बना सकीं।ई बात गोरख पाण्डेय के गीतन में दिखाई पड़ रहल बा उहो थोक के भाव में। आगे इहो कह रहल बाड़े कि कविता प्रमाणिक रूप से जन आंदोलन के जमीन तइयार कर सकेला आ एकरे प्रयास ऊ अपना गीतन के माध्यम से कइले बाड़न।

यानी कहीं कथनी आ करनी में अंतर नइखे मिलत जे प्रमाणित करत बा कि गोरख पाण्डेय लोक में असीम संभावना के देखत रहन आ गोरख संचहू असीम संभावना के गीतकार रहन। कविता के बारे में आगे इहो कहि रहल बाड़न कि समाज खातिर उपयोगी कविता ओह समय के समस्यन से टकराली सं आ ओह समस्यन के दिसा देली सं आ हम अइसने कविता चाहेनी। उनुकर मान्यता रहे कि सब गलत विचार,मूल्यन आ संस्कारन के तुड़े में कविता पूरजोर भूमिका निभावेली सं आ आजादी के राह दिखावे में एगो मसाल के काम करि सकेली सं। गोरख के मान्यता रहे कि हमनी के खाली ऊपरी अन्हार से ना बलुक नीचे से उत्पीड़ित लोगिन के संघर्ष के फूटत रोसनी के बीच जी रहल बानी जां आ कविता खाली अन्हार के बारे में ना अन्हार के तुड़े वाली रोसनी के औजार के बारे में लिखल जा रहल बा आ लिखल जाई। गोरख पाण्डेय के कृतित्व समसामयिक जन आंदोलन में लोगिन के विरोध,उन्हिन के पीड़ा आ गुस्सा के स्वर बनि शब्दन के रूप लेले बा जे उनुकर भोजपुरी गीतन में भरल आगि आ व्यंग्य के मारक क्षमता के गति देवे में उजागर भइल बा। तब त गोरख कहि रहल बाड़े '' मैं अपने बारे में कह सकता हूँ कि मैंने कदम – कदम पर पाखंड और दमन के खिलाफ बगावत की है।''

गोरख के गीतन में असीम लोक संवेदनाः

समाजवाद के परिकल्पना के सिद्धांत का रहे, केकरा खातिर रहे, बाजारवादी संस्कृति कइसे ओकरा में भटकाव ला रहल बा, राजनीतिक आ सामाजिक आज के बेवस्था में समाजवाद आपन राहि भुलाके छोटका के ओरि से मुँह मोड़ के बड़का के घर के राह धरि लेले बा।ओह सच्चाई के केतना सरल भाषा में केतना मारक व्यंग्य के साथ गोरख पाण्डेय रखले बाड़े :

नोटवा से आई
वोटवा से आई
बिड़ला के घर में समाई
समाजवाद बबुआ, धीरे – धीरे आई
....
डॉलर से आई
रूबल से आई
देसवा के बान्हे धराई
समाजवाद....
......

छोटका के छोटहन
बड़का के बड़हन
बखरा बराबर लगाई
समाजवाद......

साँच ह कि देस, समाज आ समाज के कवनो विशेष वर्ग दुखी – पीड़ित होखे अउर एगो बड़ जनसमुदाय के मूल्यन पर कुछ गिनल – चुनल लोग सत्ता अउर अर्थ के सुख भोगत होखे त कविता में प्रेम बेमानी हो जाला। गोरख के' मेहनत के बारहमासा ' खाली बारहमासा के तर्ज पर नइखे सामाजिक आ राजनीतिक विद्रूपता के अनेकन रंग के निर्लज्ज सच्चाई के खोलि के रख देले बा :

श्रम के गुनगान –

चले मेहनत से सबके अहार सजनी
बिना रोटी के न झनके सितार सजनी
हमरी मेहनत से रेल अउरी तार सजनी
हमरी मेहनत से रूप आ सिंगार सजनी
....

सामाजिक सोषण आ समाजिक संरचना पर चोट करत :

अब्बो गांव – गांव रहे जमींदार सजनी
जइसे रहरी में रहेला हुड़ार सजनी
तोहरे सुगना अस सुगना हजार सजनी
रोज – रोज होले इनके सिकार सजनी
......
दू गो गुंडा बोलवा के लठमार सजना
ढाहि दिहलस माटी के दिवार सजना
ओकर कोठिया पर कोठिया अटार सजना
हमार एक भइल अंगना – दुआर सजना
....

जाति के दिवार खड़ा करके, धरम – करम के आड़ में सोषणः

उनके जूता सी के भइलीं हम चमार सजनी
उनके डोली ढोके हो गइलीं कहार सजनी
तेल पेरलीं उनके चमकल कपार सजनी
हम मइल भइलीं तेली – कलवार सजनी
.....
जाति – पांति के उठवलें दिवार सजनी
बाटि दिहले किसान परिवार सजनी
भागि धरम – करम अवतार सजनी
एहि खून चुसवन के हथियार सजनी
......

वोट के राजनीति आ मेहनकस के हिस्सा के ओकरे आँखि के सामने लूटः

बाति अइसने करेले सरकार सजना
ओकरा ओटवे से बाटे दरकार सजना

... -----

उनके भरि दिहलीं सोना से बखार सजना
अपने घर आइल बोझा दुई – चार सजना

....

पालायन, पूंजीवाद,आर्थिक आ सारीरिक सोषणः

तूहूं गइलऽ नजरिया के पार सजना
अस जिनगी जिअल धिरकार सजना
उड़ी गइलीं कलकतिया बजार सजनी
जहाँ मेहनत के बड़े खरीदार सजनी
बड़े पूंजीपति सहरी हुड़ार सजनी
बड़े नेता बड़े रंगुआ सियार सजनी
केहू पइसा के जोड़ेला पहार सजनी
केहू हांफि हांफि खींचेला पहाड़ सजनी

....

पुरूष प्रधान समाज में नारी के नियती आ नारी मनो. विज्ञान के परख के गहराई देखीं:

उहां मेम लोग बड़ी मजेदार सजनी
पहिने कपड़ा त लउके उघार सजनी
सेठ नाच घर बनावे रंगदार सजनी
साहब मेम के नचावे पुचकार सजनी

......

कर्ज में डूबत जात रहल देस, रूस – अमेरिका के धौंस पर बाति करतः

कब्बो रूस आगे अँचरा पसार सजनी
कब्बो चले अमेरिका के बजार सजनी
भइले दूनू हमरी छाती पर सवार सजनी
सबसे भारी डाकू सबसे हतियार सजनी
रूस अउरी अमेरिका के हुड़ार सजनी
लूटि देस – देस करे खयकार सजनी

.....

दमन सोषण के विरोध एकजुटता,दलाल, पूंजीपति, जमींदार,कोट – कचहरी के खेल आ फलाफल बगावत के बिगुलः

खूनि चूसि बढ़े पूंजी बेसुमार सजनी
बढ़े महँगी, घटे जिनगी हमार सजनी
खून चूस, देस बेचवा, लबार सजनी
ई दलाल, पूंजीपति, जमींदार सजनी
फरजी,कोरट –कचहरी, सरकार सजनी
हमें लूटे बदे कइलें तइयार सजनी
इनसे निपटे के एके रस्ता – मार सजनी
जब हम मिली उठाइब हथियार सजनी
मचि चारों ओर भारी हाहाकार सजनी
भागे लगिहें देस छोड़ि के हुड़ार सजनी
अब गांव – गांव हो जा तइयार सजना
बिना क्रांति के न होई उजियार सजना

एह बारहमासा में किसान – मजदूर के बारह महीना के बारह गो दुखे के वर्णन नइखे, ओह दुख के बारह गो कारण आ अंत में क्रांति के मंत्र गोरख पाण्डेय फुंकले बाड़न। केहू के जगावे खातिर दुर्गति के कारण,दमन– सोषण के कहानी, दमन–सोषण के जड़ आ ओकर काटि बतावल जरूरी होला जे एह बरहमासा में कइल गइल बा। जिनगी से जूझे के, प्रतिशोध के, अंधविश्वास आदि के सटीक चित्रण मिलता गोरख के एह गीत में। मजदूर– किसान के जगावत कह रहल बाड़ेः

हथवा जगा द हथियरवा जगा द
करम जगा द आ बिचरवा जगा द
रोसनी से रचऽ नया जहनवा हो संघतिया
सबके जगा द।

(जागरण से)

कब तक सुतब मूंदि के नयनवा
कब तक ढोवब सुख के सपनवा
फूटलि ललकि किरनिया, चल तूहूं लड़े बदे भइया
शुरू बा किसान के लड़इया,
चल तूहूं लड़े बदे भइया।

(गुहार से)

हक के आवाज उठावतः

जोते– बोये वाला के होई माटी से ममता
जे माटी के चाहे ओकर फल पर हक हो जाई।
भूखा – नंगा, रोटी – कपड़ा पर बोलीं झट धावा
जेकर हाथ चले मिल उहे मिलके लड़ी लड़ाई।

(जे माटी के चाहे से)

करे केहू, मौज लेवे केहू के कतना सुंदर कविताई ' जमीन ' में मिल रहल बाः

जाड़ा,गरमी,बरखा न जनलीं
गोहूं ओसवलीं त भूसा बनलीं
काहें बरध सब खेतवा चरलें
हम भइनी कउड़ी के तीन।
केकरे जांगर से माटी फुलाइली
के खाए चाउर महीन।

सोषक के सोषित के प्रति आचरण,सोच ,बन्धुआ बनाके पोसल, जरूरत पड़े त जान ओकर लेके मजा लेवे के मानसिकता ' मैना ' कविता में गजब बा:

एक दिन राजा मरलें आसमान में उड़त मैना
बान्हि के घरे ले अइले मैना ना
एकरे पिछले जनम के करम
कइनीं हम सिकार के धरम
राजा कहे कुंअर से अब तू लेके खेलऽ मैना
देखऽ कतना सुंदर मैना ना।

जबले खून पिअल ना जाय
तबले कवनो काम ना आय
राजा कहें कि सीखऽ कइसे चूसल जाई मैना
कइसे स्वाद बढ़ाई मैना ना।

कवि के मालूम बा कि आजादी के राह आसान ना हो खे,सचेत करत कहत बाड़नः

बीहड़ रहिया भयावन अन्हरिया हो
कि चलि हो भइले ना
मनई मुकुति के ओर हो
कि चलि हो भइले ना।
(बीहड़ रहिया से)

' अब नहीं ' में कवि आम जनि के आवाज बनि हुंकार देत नजर आवत बाड़न।साफ शब्दन में हुंकार बा कि' गुलमिया अब हम नाही बजइबओ, अजदिया हमरा के भावेले '।

' नेह के पांती' में गोरख पाण्डेय प्रेम के मुकुति के राहि के चिराग के रूप में सामने ले आइल बाड़े।एहिजा ऊ प्रेम के माध्यम संघर्ष के पाठ पढ़ाके धारे देवे के प्रयासे नइखन करत घर आ सपना के जमीन तइयारो करत बाड़न।

तोहरे हथौड़वा से कांपे पूंजीखोरवा
हमरे हँसुअवा से हिले भूंइखोरवा
तू हवऽ जुझे के पुकरवा हो,हम तुरहिया तोहार
तू हवऽ श्रम के सुरुजवा हो,हम किरनिया तोहार।

' जनता के पलटनि ' आ ' हिल्ले ले झकझोर दुनिया' में जनता के ताकत,बगावत के बिगुल आ आजादी के सपना दिखावत कवि खुल के कहताड़े कि आजादी अब दूर नइखे।

जनता के आवे पलटनि
हिलेले झकझोर दुनिया
लड़ेलें किसनवा,लड़लें मजदूरवा
लड़े मिलि खूनवा पसेनवा
ढहे महरजवा ढहन लागे रजवा
ढहें जमींदरवा ढहलें पूंजीपतिया
हिलेले झकझोर दुनिया
बहुते नियरवा अजदिया के दिनवा
हिलेले झकझोर दुनिया।

' कोइला ' एगो छोट कविता ह जे बतावत बा कि विकास के गाड़ी बिना कोइला के ना चले बाकिर केहू ई सोचे वाला नइखे कि कोइला कहाँ से आइल आ ओकरा के खान से तोड़ि के ले आवे वाला के रोसनी काहे नसीब नइखे। मजदूर के जिनगी के सांच बखानत एगो सुंदर कविता।

गोरख पाण्डेय के गीत वर्ग संघर्ष आ सोषण – विद्रोह के प्रगतिशील चेतना से प्रेरित – पोषित बाड़ी सं बाकिर जिंदगी के वास्तविकता से कबो मुँह मोड़त नइखे मिलत।गोरख के गीतन में अद्भुत आ उत्सुक लोक जुड़ाव ओह गीतन के प्राण बा आ उहे ओह गीतन के जन के मन में घर बनावे के मुख्य कारण रहल बा। किसान – मजदूर के जीवन के अलावा नारी के स्थिति, सांप्रदायिकता, बेवस्था में अंतर्विरोध, धनलिप्सा आदि समाज आ राजनीति के अनेकन करूप पक्षन पर गोरख खुल के बाति करत आजादी के पक्षधर के रूप में खड़ा मिल रहल बाड़न। गोरख पाण्डेय आपन ओह सब अनुभवन के रचना में ढाले के प्रयास कइले बाड़न जवन अनुभव उनुका के भीतर से झकझोरले बा आ उहो शब्दन के अंगारा में पकाके।गोरख के कवितन से संवाद कइला पर इहो बुझाता कि हासिया आदमी के घर ना होखे, ऊ संघर्ष स्थल होखेला जहां आदमी संघर्ष के पाठ पढ़ि आपन घर आ सपना के जमीन तइयार करेला।

लोक में असीम संभावना देखे वाला गोरख पाण्डेय खुद असीम संभावना के कवि हवन ई प्रमाणित कर रहल बा उनुकर कृतित्व।एक लाइन में कहल जाय त गोरख पाण्डेय समसामयिक लोक यथार्थ के अभिव्यक्ति के अपना गीतन के मूल स्वर बनवले बाड़न।

साभार –

1 गोरख पाण्डेय के भोजपुरी गीत
जीतेन्द्र वर्मा

२ गोरख पाण्डेय (आलेख)
प्रियंका दूबे

३ गोरख पाण्डेयः साक्षात्कारों के आइने से
समकालीन जनमत

❑❑

❍ राँची (झारखंड)

राजनीति कै इहै पहाडा

योगेंद्र शर्मा 'योगी'

बता के पढ़िया बांटा पाड़ा
राजनीति कै इहै पहाड़ा
जनता खातिर थूकल बीया
अपने सोगहग भखा छोहाड़ा।

बिना कमीशन बने न कुच्छौ
शौचालय गऊशाला एकौ
तन गयल आपन तल्ला तल्ला
कोई बितावै नंगे जाड़ा।

पईसा कहाँ गयल सरकारी
के घुमत हव बईठ सफारी
राजतन्त्र भी लज्जित बाटै
बाजत दुअरे देख नगाड़ा।

ब्लाक बीडीओ अउर सेकेटरी
परधाने संग काटैं गठरी
ठठरी लउकत लोकतंत्र कै
बिन बोकला जस लगै सिंघाड़ा।

मुँह में राम बगल छुरी
लेके वोट बनावा दूरी
का करबा अब हाल जान के
जान पड़त अस मरलस माड़ा।

बड़हन कुरता बड़ा खलीत्ता
पहिन के उचका बित्ता बित्ता
फिकिर करा ना पैजामा क
कई दोहर हव "योगी" नाड़ा।

बता के पढ़िया बांटा पाड़ा
राजनीति कै इहै पहाड़ा।।

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

गीत

कृष्णदेव ' घायल '

का बिधि लिखनी बिधाता–
कहतो में जिया संकुचाता ।

मनवाँ के साध नाहि अवले पुराइल।
दुरमुस से पोर पोर जिनगी थुराइल।
टिसुन्हाँ के टूटे न ताँता–
कहतो में जिया संकुचाता ।

भाई के देखि आजु भाई टिसाला।
जउवे का संगें संगें घुनवों पिसाला।
तवना प जोगवेला नाता–
कहतो में जिया संकुचाता ।

मन–हिरना का जग में जोहे कस्तूरी ।
मूँहें में राम रखें बगले में छूरी।
धोखा से हिया नकुआता –
कहतो में जिया संकुचाता ।

नेह के तलइया के सूखि रहल पानी।
बिहँसेला बेहया बन शोभा के खानी।
केवल करेज कोम्हिलाता–
कहतो में जिया संकुचाता ।

सुधियन का दियना में असरा के बाती।
मुरझाइल जोति ले के जरे संझवाती।
गीत ना सिंगार के लिखाता–
कहतो में जिया संकुचाता।

❑❑

❍ ग्राम–चन्द्रापार, पोस्ट–भोपौरा,
जनपद–मऊ ((उ.प्र.)

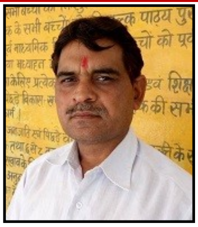

गीत

राकेश कुमार पांडेय

निबिया के गछिया उजर फूले फूलवा हो,
हरियर पतवा जमुनिया फुलाइल बा।
पीयरे–पीयर भंड़भड़वा क फूल देखि,
भंवरा रसिक रस चूसि बउराइल बा।
धनि–धनि चइत में अमवां टिकोरा बीच,
बोलेले कोइलिया कुहूकि अउंजाइल बा।
मह–मह,महुआ चूयेला रात टप–टप,
बिरही सेजरिया धधकि–धधिकाइल बा।

कठिन कमाई गिरहस्थी क भीर इहे।
गोंहुआ पकल खेत बाल पियराइल बा।
होत भिनुसहरे जगावेले महोखिया हो।
कटिया क बेला इहे मनवां भीराइल बा।
चलेलीं सलोनी खेत हंसुआ पथरि हाथ।
देंहिया भरल मद बोझ अलिसाइल बा।
नरमी कलइया बजेले चूड़ी खन–खन।
सिहरत चनरमा उगल मधुआइल बा।

पुरुब ललाई तजी निकसें सुरुज देखि।
घुंघुटा क लाली लाल चटके देखाइल बा।
पछिवा क हावा धंसे देंहिया पीयर घाम।
कटिया करत गोरी मुहवां झुराइल बा।
माथे क पसेइया पोंछेलीं मुंह अंचरा से।
सुरुज करेजवा सिंहकी सिहराइल बा।
दिनवां उगल चान खेतवा में भोरवें से।
चंहकत चिरइया करेजवा जुड़ाइल बा।

खेतिये किसनिया में मिहनत अथक धनि।
पियरी बदनियां सुमुखि कुम्हिलाइल बा।
गरदा–गुबार धूर–मटिये पसिजि देंह।
मटिये में माटी खोजी माटी संवराइल बा।
दिनवां कटाई रात बीते खरिहनवें में।
तीसिया केराय चना गोंहुआ दंवाइल बा।
कवन लरिकपन सुखवा जवानी हेरीं।
करजे में जिनगी ठसकी अफनाइल बा।

दुःखवे में जिनगी किसनियें में सुख थोर।
सबही मुआवे मोर खेतिये बिलाइल बा।
काठ बांस बान्हिके अगोरीं खेत पूस माघ।
चइत में ओला परल खेत करियाइल बा।
लोटि गइलें गोंहुआ लगल खेत रोईं देखि।
केहुये सहाय नाहीं कगदे लिखाइल बा।
खदिया क दाम पानी बिजुरी महंग भरीं।
लागतो मिलेला कहां सेतिये बिकाइल बा।

चलें घाम छाता तानी शीत घरे बइठे जेही।
करें बात खेतिहर क ऊहे दिन आइल बा।
गमला क बगिया देखेलें फूल भांत–भांत।
जोजना बनावें ऊहे देखते बुझाइल बा।
छोटहर किसान मरें करजा चढ़ल माथ।
लरिकन का पढ़ें फीस कॉपी महंगाइल बा।
बेटी क बियाह दान जवन दहेज आगि।
कइसे होई सोचि सोचि मथवा पीराइल बा।

❑❑

❍ **हुरमुजपुर, गाजीपुर**
उत्तर प्रदेश

अजय साहनी

गजल

आपसे आपसे में लड़ेला बहुत।
आदमी आदमी से डरेला बहुत।।

जी सकत बा न कोई अकेला इहाँ
भीड़ में जिंदगी के झमेला बहुत।।

दिल त कवनो खिलौना हवे ना मगर
लोग खेले बहुत,आ तुड़ेला बहुत।।

ढेर दिन तक जमाना में ऊ ना बचे
जे सहेला बहुत,चुप रहेला बहुत ।।

जब महाजन के करजा रहे देह पर
कॉट अइसन बिछौना चुभेला बहुत।।

ए ''अजय''हाथ से फूल बरसत रहो
ना त झोरी में तहरो बा ढेला बहुत।।

❑❑

❍ **रोहिणी सेक्टर 7 नई दिल्ली**

चइता

गीता चौबे गूँज

बीत गइले फागुन महीनवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी।
कहिया ले होइहें गवनवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी ।।

बिटिया के सखी सभ गइली ससुरवा
केहू नाहीं लउकली घरवा–दुआरवा
सून भइले गाँव के इनारवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी ।
बीत गइले फागुन...

पइसा उधार ले के कइनी बियाहवा
बंधक रखी दीहनी खेतवा–बधारवा,
तब हूँ ना पूरेला दहेजवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी।
बीत गइले फागुन...

मथवा प हाथ धइले बाबा दुआरवा
कुफुत में बइठल बाड़ी आम्मा अंगनवा,
धियवा भइली दुसमनवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी ।
बीत गइले फागुन...

आम मोजरइले त कूहके कोइलिया,
पिया बिनु नइहर में धियवा जोगिनिया
देखी–देखी फाटेला करेजवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी
बीत गइले फागुन...

बीत गइले फागुन महीनवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी ।
कहिया ले होइहें गवनवा हो रामा, सुनीं मोरे रामजी ।।

❑❑

❍ बेंगलुरु, कर्नाटक

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

आनंद कुमार पांडेय

चांद कहवा छुपल

चांद कहवा छुपल कि छुपल रह गईल।
प्रेम से इ सहेजल भवन ढह गईल।।
दिल के दरवान दिल के दरद ना बुझे।
नीर अखियां के गिरल त सब बह गईल।।

जेके अखियां के पुतरी बनवले रहीं।
उ बदल जायी अइसे खबर ना रहे।।
आसमां के परी जिनके जानत रहीं।
छोड़ अइसे दिहें तनिको डर ना रहे।।
इहे जीवन के असली सच्चाई बा हो।
नाहीं मुहवा खुलल बात सब कह गईल।।
चांद कहवा छुपल कि छुपल रह गईल।
प्रेम से इ सहेजल भवन ढह गईल।।

बनके परछाई जे हमरा साथे चलल।
आज ओही के रहिया निहारत बानी।।
जे सजावल सनेहिया के संसार के।
का भईल अब कि उनके बिसारत बानी।।
सात सूर जेके आपन बनवले रही।
बेसुरापन के फिर भी झलक रह गईल।।
चांद कहवा छुपल कि छुपल रह गईल।
प्रेम से इ सहेजल भवन ढह गईल।।

सुख के सपना देखल आज सपना भईल।
जान जायी की रही बा फेरा लगल।।
आस के जो जरवनी दीया बुझ गईल।
रात जीनीगी भईल ना सवेरा लगल।।
खास रहे जे अब पास बावे हीं ना।
दिल कसक में हीं सारा दरद सह गईल।।
चांद कहवा छुपल कि छुपल रह गईल।
प्रेम से इ सहेजल भवन ढह गईल।।

जानी गइनी ए माया के संसार में।
जे जीनीगी निबाहे उ मिल ना सकी।।
जवन फूलवा लगल पेड़ से झर गईल।
फिर दुबारा कली बनके खिल ना सकी।।
केहू समझे ना आनंद दिल के व्यथा।
उड़ल खोता से चिरइया चहक रह गईल।।
चांद कहवा छुपल कि छुपल रह गईल।
प्रेम से इ सहेजल भवन ढह गईल।।

❑❑

❍ बलिया (उत्तर प्रदेश)

कइसे के जोड़ीं दइया उमिरि उमिरिया से

रामरक्षा मिश्र विमल

टोकला प तनिका में छरके बचनिया
आ मुँह के ललइया फँफाइ
निमन जबुनवा का हरियर गँछिया के
निठुर पवन उधियाइ।
मिठ–मिठ गीत लागे तितकी कँकरिया
सरेहिया नगड़वा पिटाइ
नेहिया के नन्हका पलउआ झँवाइल
देंहिया के बन्हकी धराइ।
मिले ना उजास कबो बतिया बिचरवा में
असहीं उचारेला झकास
तनिको जबनिया में मिले नाहीं लसिया
आ बिखरेला सगरी भँड़ास।
बड़ के आदर कहाँ छोट के दुलरवा
बा अँखिया से सरम बिलाइ
गतरे गतर बा बिरोध के लहरिया
जहरिया गगरिया समाइ।
कवनो सवाल करीं एकहीं जबबवा बा
पिढ़िया के फरक विशाल
कइसे के जोड़ीं दइया उमिरि उमिरिया से
रतिया में एको ना मशाल।

❑❑

❍ सरकारी स्कूल, पिपरा के निकट,
देवनगर, पोल नं. 28 शाहपुर–पिपरा रोड,
मनोहरपुर कछुआरा, पटना – 800030
ई मेल : rmishravimal@gmail-com

देवेन्द्र कुमार राय

गजबे सोच जवान भइल

सोंच गजबे इ अचके जवान हो गइल,
कांट महकी के सपना सेयान हो गइल।
जरत भुभुरी के रोज हम अंचरा धरीं,
करम इहे अब लमहर ग्यान हो गइल।

जे रोपेया में जारि नियत भभकल चले,
आजु दुनिया में उहे महान हो गइल।
माटी के बिकाइल अब महंगा भइल,
आदमी के बिकल त आसान हो गइल।

जे छन में बेंचाए खातीर चितउर भइल,
उहे नीमन तपस्या के धेयान हो गइल।
भले करम के धुआं से घर के कोना करीखा होइ,
हर कदम प बिके के लोगन के अरमान हो गइल।

राय के कीने के बोली जे लगाइ एहिजा,
इहे अब सबसे बड़का अब बिग्यान हो गइल।

❑❑

❍ जमुआँव, पीरो, भोजपुर, बिहार

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

रुदन राम के

विवेक त्रिपाठी

अँखिया से दूर कइसे जइबू हो,
सीता कइसे बितइबू,
सुनसान बनवा महिनवा ढेर कइसे बितइबू..

हाए रे मुदइया के कठिने समईया,
कठोर बचनवा में दिहनी सँसतीया,

बिधना के बान्हल इ कलईया कहे कइसे खोलइबू,
सुनसान बनवा महिनवा सीता कइसे बितइबू..

कवन मुँह देखाईं तोहके करिं कइसे बतिया,
भरी दुपहरिया में घेरे कारी रतिया,

सुखे दुखे रहलू सहईया सीता कइसे भूलइबू,
सुनसान बनवा महिनवा ढेर कइसे बितइबू..

होइतें बाबूजी हमार खूबे गरियइतें,
ऋषि मुनि ज्ञानी सऊँसे साजे सरियइतें,

चनके लागि चूड़िया कंगनवा सीता कइसे बचइबू,
सुनसान बनवा महिनवा ढेर कइसे बितइबू..

न्याए, मरियादा, कुल, बंस के सपनवा,
भारी पाँव बढ़े लगली भरले नयनवा,

हाए हाए अवध नगरिया कउने मोले मोलवइबू,
सुनसान बनवा महिनवा ढेर कइसे बितइबू..

❑❑

❍ खोरी, बरहज, देवरिया (उ० प्र०)

मुँह मारी कमाई के

दीपक तिवारी

मुँह मारो ओइसन कमाई के,
जेसे सुख ना मिले लुगाई के।
सरधा पूरे ना शवख सिंगार,
खुश रहे ना घर परिवार।

छोट,छोट चीझ बदे,तरसेला जिउ,
रोटी में लगा के,मिले खाए के ना घिउ।
नून तेल मसाला बदे,लिहल जा करजा,
चले ना सुबहित,घरवा के खरचा।
बहे निशदिन अँसूवा के धार..
खुश रहे ना घर परिवार।

सालो में एको,किनाला ना साड़ी,
चोकर बिना रोज,चोकरे ले पाड़ी।
झूठे के शवख ,शान बा सारा,
देखी के दीपक,चढ़ी जाला पारा।
व्यर्थ जिनगी लागेला हमार..
खुश रहे ना घर परिवार।

❑

❍ श्रीकरपुर, सिवान

जिनगी कवने घाटे

केशव मोहन पाण्डेय

देख के करेजवा फाटे हो रामा
जिनगी कवने घाटे

एक त कोरोनवा से कलपे करेजवा
दोसरे छुअइला मिलला से परहेज बा
तीजे पाँव रहिया में बाटे हो रामा
जिनगी कवने घाटे

असरा के गँठरी गुटिआई गाँव छोड़ले
मन सासत सही शहरी से जोड़ले
उहो शहरी अलगा छाँटे हो रामा
जिनगी कवने घाटे

सगरो विधान सगरो शासन फेल बा
अपना माटी माई ममता के खेल बा
कहे लोग निपट चपाटे हो रामा
जिनगी कवने घाटे

पहिले गरीबी बाद कोरोनावा मारी
कइसे दीं कवनो सरकार के गारी
बोले में त सभे लागे भाँटे हो रामा
जिनगी कवने घाटे

❑

❍ राजपुरी, नई दिल्ली

केशव मोहन पाण्डेय

पिया नाहीं अइले

पीपर पात झरि गइले हो रामा,
पिया नाहीं अइले।
मन के कुसुम कुम्हिलइले हो रामा,
पिया नाहीं अइले।।

सरसों के फूलवा झरे, मन हहरे,
सुरुज तपे लगले पहिलके पहरे,
हमरा से पपीहो परइले हो रामा,
पिया नाहीं अइले।।

अड़ोसिया–पड़ोसिया सभे रति गावें,
कुहूक रोज अँगना कोइलरिया रिगावे,
सुनि के हिया छछनइले हो रामा,
पिया नाहीं अइले।।

अइहें त छुपायेब पुतरी के भीतरी,
दिन–रात बइठल रहब उनके पँजरी,
हरषि हिया हहरइले हो रामा ,
पिया नाहीं अइले।।

अइहें पियवा त धरेब भर अँकवारी,
कोइलासिए ना रही बारी के बारी,
सोचि के मदन मन धधइले हो रामा,
पिया नाहीं अइले।।

❑❑

❍ राजपुरी, नई दिल्ली

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

पिया निरमोहिया

सुधिया के डोर सरकावे हो रामा
पिया निरमोहिया।

नीक ना लागे टहक अँजोरिया
तरई गीनत बिरहीन गोरिया
उनुका रहनिया न भावे हो रामा
पिया निरमोहिया।

तहरे सुधिया में देहिया झुराइल
अँखिया मलीन मन मरुआइल
पगली कोइलिया जगावे हो रामा
पिया निरमोहिया।

तहरे बिनु ना भावे सिंगरवा
देवरो घूमत बनिके भंवरवा
बाउर सोचिया डरावे हो रामा
पिया निरमोहिया।

❑❑

चइत महिनवाँ

सुनुगी, दहके पलसवा हो रामा
चइत महिनवाँ।

मने–मन रोजे खउलत बानी
करनी आपन तउलत बानी
पूरल नाही तलसवा हो रामा
चइत महिनवाँ।

हिय के पिरिया गइल उपराई
मनवाँ क बतिया गइल कहाई
पाचत नइखे हुलसवा हो रामा
चइत महिनवाँ।

भर जिनगी में कहनी गवली
नीको– नेवर कुछो ना पवली
देखिले रोज कलसवा हो रामा
चइत महिनवाँ।

❑❑

❍ कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

संजय कुमार ओझा

बोलऽ आपन उ गाँव कहाँ बा

जहाँ राही बटोही उतारे थकान,
जहाँ भर दूपहरिया होखे जूटान,
बरगद पकड़ी के छाँव कहां बा,
बोलऽ आपन उ गांव कहां बा।

लइकाईं बितल दोल्हा पाँती में,
हूक उठेला अब छाती में,
लइकन के अब उ ठाँव कहां बा,
बोलऽ आपन उ गांव कहां बा।

नईकी बहुरिया घूघ टाँग के,
बरह्म बाबा से आशीष माँग के,
छनके पायल उ पाँव कहां बा,
बोलऽ आपन उ गांव कहां बा।

गाछ रहे उ गांव का बीचे,
कबड्डी चिक्का होखे नीचे,
धोबिया पाट उ दाँव कहां बा,
बोलऽ आपन उ गांव कहां बा।

भोरे कोईली कूक लगावे,
तोंता मैना के खूब रिगावे,
कउवन के काँव काँव कहां बा,
बोलऽ आपन उ गांव कहां बा।

❑❑

पर्यावरण

राह पर रहत रहे, झूड़मूट जब गछियन के,
केतना सकून मिले, राह चलऽअंत पथिकन के।

गाछ बिरिछ कटात जाता देखीं जेने सगरो,
बाग बगइचा ओरात जाता देखीं ओने सगरो।

कईसे सांस लीही काल्ह, आवे वाला पीढ़ी,
कईसे चढ़ी उपर, जब रहबे ना करी सीढ़ी।

सूख गईल बा इनरा पोखर, गाँउवा जवार के,
सोचत नईखे लोग आज, पड़ऽत सूखाड़ के।
ई बात बूझे के चाहीं, हमरा रउरा सबका,
कुछ करे के जिमवारी आईल बा सबका।

चलीं मिलजूल के एगो डेग बढ़वल जाय,
खाली धरती प, कुछ पेड़ लगावल जाय।

माई के देहिया, कुछ रंगीन बनावल जाय,
सून होखत मांग प,फूल पतई सजावल जाय।

हर गाछिया श्रोत बनी, रोजे जीवन–वायु के,
इहे आधार बनी, लइकन का लमहर आयु के।

बाँची जो पर्यावरण, ''संजय'' फईली हरियाली,
जीनगी बनी आसान,आ आई खूब खुशहाली।

❑❑

❍ गाजियाबाद (उ0 प्र0)

सरयू माई से एगो अरज

नीरज जायसवाल

हे घाघरा माई तू कहाँ चल गइलू
बचपन से तोहरा के देखनी
खूब देखनी, खूब खेलनी, खूब नहैनी
तोहरे आँचल में सियान भइनी
अब जब तोहरा के खूब जननी
त हमरा से दूर हो गइलू
प्रकृति के बदलाव मानी
कि मानी हमनी द्वारा करल कटाव
हे माँ, तोहरा से विनती बा
एक बार फिर छपरा किनारे आई
कि हमहुँ सेमरिया से चिरांद घाट तक
कर लीं नौका–विहार
रउआ के देख के अब जी जुड़ा जाये
अउर छपरा आपन माँ के आँचल में फिर आ जाव

❑❑

❍ छत्तीसगढ़

जे माहुर पीएला उहे पगला नीलकंठ होला

जनकदेव जनक

साहित्यिकार राजकुमार सिंह के छवि भूला नइखीं पावत। हमेशा उनुकर गोरा चिट्ठा, हंसमुख, बेबाक बतकही आ छल कपट से बेदाग चेहरा आंखि के सोझा नाचत रहता। कबहुं उनुका माथा पर चिंता, कुंठा आ अवसाद के गठरी बोझा बनत ना लउकल। दुख तकलीफ केकरा माथा पर ना आवेला, बाकिर जे माहुरो पी जाला उहे नूं नीलकंठ कहाला।

हमरा से जब जब भेंट होई, पहिले कथा कहानी, कविता आउर हाइकु पर जरूरे चर्चा होई, ओकरा बादे आपसी हाल चाल। उनका रोम रोम में सृजनशीलता भरल रहे। उ मनहूस दिन हम भूला नइखी पावत, जब राज कुमार सिंह के मरला के खबर मिलल रहे। एह खबर पर विश्वास ना भइल, काहे से कि एक सप्ताह पहिलही उ हमरा घरे आइल रहस आ साथही दुनू आदमी खाना खइले रहीसं।

जब मउवत के खबर मिलल, ओह टाइम हम सुभाष चौक झरिया के पास अपना प्रभात खबर कार्यालय में समाचारन के संपादन में बाझल रहीं। तुरंते उनका मोबाइल पर बात करे के चहनीं, बाकिर बात ना भइल। मोबाइल स्विच ऑफ बतवलस। तब उनुका स्टाफ गणेश मोदक के फोन कइनी। तब जाके राजकुमार सिंह के मउवत के बारे में सही जानकारी मिलल.

गणेश मोदक बतवलस कि 19 मार्च 2023 के राजकुमार सिंह इलाज के दौरान भगवान के पियारा हो गइनीं। 17 मार्च के उहां के अपना मकान के तीसरका मंजिल के सीढ़ी से नीचे गिर गइल रहीं।घायलावस्था में होस्पीटल में भर्ती करावल गइल रहे, घटना के समय घर में केवल राजकुमार सिंह रहनीं। उहां के मालकिन अपना बड़ बेटा से मिले जयपुर गइल रहीं। जबकि छोट बेटा मुंबई में अपना नौकरी पर रहलें। उहां के मरला के बादे पूरा परिवार के लोग घरे पहुंचल आ उहां के पार्थिव शरीर के दर्शन कइलस। हमरों बदनसिबी अइसन कि झरिया में रहते घटना के सूचना ना मिल सकल। बहरहाल,
साहित्यकार राजकुमार सिंह, जेकर उमिर 64 वां पायदान पार कइले रहे, उहां के असमय काल अपना गाल में समा लेलस। उहां से हमार पहिल मुलाकात 2005 में भइल रहे, जब उहां के निवास स्थान ऊपर राजबाड़ी रोड झरिया में विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन धनबाद शाखा के बइठक भइल रहे। ओह बइठक में ख्यातिप्राप्त साहित्याकार चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, सूझबूझ पत्रिका के संपादक कृपाशंकर प्रसाद, अनिल सिंह सेंगर, अशोक श्रीवास्तव, अजय आशिक सहित अन्य नामचीन लोग शामिल रहे। ओह बैइठक के बाद से हमनी के बीच साहित्यिक चरचा होखे लागल। ओह घड़ी "भोजपुरी संसार" पत्रिका बुक स्टाल पर मिल जाव। पढ़ला के बाद प्रकाशित रचनन पर उ बेबाक टिप्पनी करस। एक दिन हमरा मोबाइल पर पत्रिका के संपादक आशा श्रीवास्तव जी के पति के फोन आइल. उहां के पूछनी कि राजकुमार सिंह के हटे जनक जी? भोजपुरी संसार पत्रिका के छपल रचनन पर उहां के बड़ा तीखा प्रतिक्रिया बाटे. कई गो सम्मानित रचनाकार लोग के रचना पर उहां के टिप्पनी कइले बानीं. हम उहां से कहनी कि राजकुमार सिंह झरिया के सम्मानित व्यक्ति हई. अगर उहां के टिप्पनी पसंद ना होखे त मत छापी, बाकिर उहां के कवनो रचना पर साहित्यिक पत्रिका "हंस" लेखा बेबाक आ बिना लाग लपेट के आपन बात रखेनीं.

राजकुमार सिंह भोजपुरी आ हिन्दी के रचनाकार रहीं. उहां के पहिल भोजपुरी कहानी "गिद्ध" भोजपुरी संसार पत्रिका लखनऊ में छपल रहे. कहानी प्रकाशन के बाद राजकुमार जी चर्चा में अइनी. भोजपुरी साहित्य सरिता में उहां के दुगो कहानी –" माटी के पुत आ मलिकार छप चुकल बाटे. एकरा अलावा उहां के रचना हैलो भोजपुरी दिल्ली, भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका पटना, सूझ बूझ धनबाद, द संडे इंडियन नोएडा, पपीहरा छपरा, कचनार सिवान, भोजपुरी भारती छपरा, साखी जमशेदपुर, सोच विचार बनारस, दैनिक आज पटना, चौथी दृष्टि लखनऊ, नूतन कहानियां,सरस सलिल आदि पत्र पत्रिकन में कहानी, कविता, हास्य व्यंग्य, हाइकू आदि निरंतर प्रकाशित होत रहे. उहां विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन झारखंड के अध्यक्ष व जनवादी लेखक संघ झरिया इकाई के सदस्य रही. पिछला बरिश 2022 में प्रेस क्लब झरिया के ओर से राजकुमार सिंह के साहित्य सेवा खातिर सम्मानित कइल गइल रहे.
आखिर में हम इहे कहब–
सबके पीछे छोड़ेवाला के जिनगी उद्धार हो गईल
पग–पग माहुर पिएवाला पगला नीलकंठ हो गईल।

❑❑

❍ झरिया, धनबाद, झारखंड,

हृदय से वंदन बा

रामसागर सिंह "सागर"

जे कोसिला कोख सँवार दिहल,
कूल दियना बन अवतार लिहल,
चउथो पनवा में दशरथ के
निरवंशी के दाग उतार दिहल,
जेकर नाम कौशल्यानंदन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

गुरु घर जाई जे ज्ञान पियल,
गुरु चरनन के सम्मान दिहल,
पा एक इशारा गुरुवर के
चलले जे धनुषा बाण लिहल,
जे गुण से शीतल चंदन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

वन में दानव जे मार दिहल,
रिषियन के यज्ञ उबार दिहल,
पापिन ताड़का के मार दिहल
जे नारी अहिल्या तार दिहल,
ओही राम के नित अभिनंदन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

गुरु संग जनकपुरी जाई के जे,
तुरी दिहले शिव धनुराई के जे,
जे स्वयंवर दर्प बढ़ा दिहले
सीता संग ब्याह रचाई के जे,
हर्षित मिथिला के जन जन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

पिता के वचन के पूर्ण करे,
जे निकल गइल वनवा विचरे,
बड़ी प्रेम से खइले जुठ बइर
भीलनी शबरी के जाई घरे,
जेकर रुप सिया सुख नंदन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

जेही नाम के लेके पवन कुंवर,
पा गइले जीत समुन्दर पर,
जेही नाम से लंका खाक भइल
पानी पर तैरल शील पत्थर,
जे साधु सन्त मन रंजन बा
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

जेही नाम से पाके अतुलित बल,
हनुमान उठवले मंदराचल,
जेही नाम सुनी के थर थर थर
कांपे लंकापति, दानव दल,
जे पापी कुटिल के क्रंदन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

जे धर्म के मर्म बता दिहले,
रावण के दर्प मिटा दिहले,
रामसागर" चरित उ पावन ह
जे धर्म ध्वजा फहरा दिहले,
तीनु लोक के जे दुखभंजन बा,
कर जोरी हृदय से वंदन बा!

❑❑

○ सिवान, बिहार

छूटल नइहर

सविता गुप्ता

दुअरा पर ठाड़ माई।
स्वागत में जेठ भाई।
स्नेह लुटावे भौजाई।
नइहर के याद सतावेला।

बचवन के गर्मी के छुट्टी।
बाबु खोले बंद मुट्ठी।
रोज होखे होली,दिवाली।
पूरी ,पकवान भर थाली।
नइहर के याद सतावेला।

चले के बेर भरल आँख में लोर।
बाँध के अचरा के डोर।
चाउर,हरदी, दूबी खोइचा,
नइहर के याद बाड़ा आवेला।

लाग के देवता के गोड़।
माई,बाबू के दुअरा छोड़।
सहेज के नवका लुगा,
बंद भइल याद के पेटी
बिदा भइल घर के बेटी।

सुन हो गइल घरवा
कब अइबू बेटी नइहरवा?
अब के कही इ बतवा?
माई बिनु सून भइल
माई के याद सतावेला।

सब कुछ छूट गइल
नइहर अब दूर भइल।

❑❑

○ राँची , झारखंड

आलेख/ शोध–लेख/निबंध

सम्राट अशोक सबसे पहिले कल्याणकारी अर्थशास्त्र के सिद्धांत देले रहले

धनञ्जय कटकैरा

एडम स्मिथ 1776 ई. में अपना किताब 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में पहिला बेर कहले बाड़न कि पइसा के इस्तेमाल उत्पादन, आदान–प्रदान आ वितरण में होखे के चाहीं। पइसा के एकट्ठा ना हो खे के चाहीं बलुक मानव कल्याण खातिर सही तरीका से इस्तेमाल होखे के चाहीं. भारत में प्रियदर्शी सम्राट अशोक इहे बात 261 ई.पू. में कहत रहलें. उ राज्य के पईसा जनता में निवेश कइले ताकि आम जीवन सुखी, शांतिपूर्ण अवुरी सुलभ हो सके। शिलालेख के अलावा उनकर कवनो दोसर लिखित दस्तावेज उपलब्ध नइखे, अगर आउरी कुछ रहित त शायद उनकर अउरी कई गो कल्याणकारी नीति सामने आ गईल रहित। कल्याणकारी अर्थशास्त्र के सिद्धांत के स्थापना पिगू द्वारा 1920 में कइल गइल। पिगू पहिला अर्थशास्त्री रहलें जे कल्याण के वैज्ञानिक आ व्यवस्थित चर्चा बिकसित कइलें आ आर्थिक सिद्धांत के एगो बिसेस शाखा के रूप में बिकसित कइलें। उनकर कल्याण सिद्धांत मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण पर आधारित रहे। उहाँ के 1920 में प्रकाशित अपना किताब इकोनॉमिक्स ऑफ वेलफेयर में एही उपयोगिता विश्लेषण के विस्तार कइले बानी। पिगू आगे कहत बाड़न कि गरीबन के भलाई खातिर सरकार के ओह लोग के इस्तेमाल के सामान पर अनुदान देबे के चाहीं, आ सरकार के अमीर लोग पर कर लगा के अनुदान से भइल नुकसान के वसूली करे के चाहीं, अगर समाज कल्याण के अधिका से अधिका बनावे के बा त समानता होखे के चाहीं राष्ट्रीय आय के बंटवारा में, जबकि भारत में 1550 में सासाराम के शासक शेर शाह सूरी, जे बाद में पूरा भारत के सम्राट बनलें, जनता के भलाई खातिर कई गो काम कइलें। उ एगो नया शहरी व्यवस्था ले अइले, सैन्य प्रशासन के मजबूत कइले, पहिला बेर रुपया के मुद्रा अपना लिहले, डाक प्रणाली के पुनर्गठन कइले, काबुल से चटगांव बांग्लादेश तक के जीटी सड़क के निर्माण कइले, जमीन नापे के नया तरीका आ जमीन के नया सिस्टम विकसित कइले। उ देश आ दुनिया के किराया के सिद्धांत दिहलें। जवना के वर्तमान सरकार आजुवो अपनावेले। 1998 में अमर्त्य सेन के कल्याण अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार मिलल, आ 1999 में 1 साल बाद भारतो रत्न से सम्मानित कइल गइल। अपना कल्याणकारी अर्थशास्त्र के सिद्धांत में ऊ लिखले बाड़न कि–अकाल पइसा के कमी से ना होला बलुक पइसा के गलत बंटवारा का चलते होला. जरूरतमंद लोग के पईसा के सही बंटवारा ना होखल, अकाल के सबसे बड़ कारण बा, एही सिद्धांत प उनुका दुनिया के सबसे बड़ इनाम मिलेल। बाद में अर्थशास्त्री लोग के दिहल सिद्धांत भारत में कहीं पहिले से लागू हो गईल रहे। एकरा के सही तरीका से लागू ना होखे के चलते देश पिछड़ गईल। जब एगो भव्य महल बनावल, एगो ऊँच आ मजबूत सीमा देवाल बनावल, अधिका से अधिका रणनीतिक सामान एकट्ठा कइल एगो मजबूत राष्ट्र के निशानी रहे, ओह घरी सम्राट अशोक युद्ध के त्याग कर दिहलन, विस्तारवाद के नीति छोड़ दिहलन आ आपन सगरी पइसा आ समय गरीब जनता के कल्याण में लगा दिहलन। एह के बाद सम्राट अशोक के राज्य सबसे मजबूत राज्य में से एक बन गईल। आजुओ देश के ताकत आ समृद्धि के नाप ओकरा नागरिकन के जीवन स्तर,खान पान, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वास्थ्य से नापल जाला आ ना कि ओहिजा केतना रणनीतिक शक्ति उपलब्ध बा. भारत में सम्राट अशोक सबसे पहिले कल्याणकारी नीति अपनवलें आ अपना कार्य सूची में जन कल्याण के सबसे ऊपर रखले। सम्राट अशोक ई सब काम तब करत रहले जब पड़ोसी देश विस्तारवाद पर ध्यान देले रहे तब सम्राट अशोक सड़क बना के, छायादार पेड़ लगा के, कुआं खोद के, धर्मशाला बना के, बौद्ध विहार बना के, इंसान आ जानवर खातिर अस्पताल बना के, रणनीतिक रूप से अपना के मजबूत करत रहले। ओह घरी ई एगो बड़हन फैसला रहे।ओह लोग के बनावल बौद्ध विहारन के भरमार का चलते एह क्षेत्र के नाम बिहार राखल गइल.

आजुवो बिहार आ भारत सरकार के कई गो नीति सम्राट अशोक के शासनकाल से प्रेरित बा, जइसे कि सड़क निर्माण खातिर शिलालेख भा कवनो दोसर जानकारी शिलालेख द्वारा दिहल, सड़क के किनारे बागान आ पीये के पानी के व्यवस्था, पशु चिकित्सा के व्यवस्था।सरकार द्वारा गरीबन खातिर मकान निर्माण आदि। सम्राट अशोक के अइसन कई गो काम बा जवन आजुओ प्रासंगिक बा आ सरकार ओह नीतियन के अपना के जन कल्याण खातिर काम करत बिया.

❑❑

❍ **शोधार्थी वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार**

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में : एक नजर

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

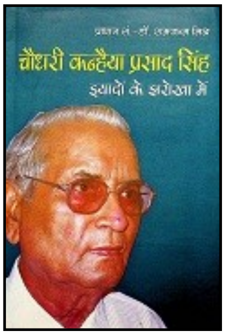

स्व0 चौ0 कन्हैया प्रसाद सिंह के नाँव भोजपुरी साहित्य जगत में एगो दमगर उपस्थिति के संगे सोझा आवेला। उनुका अपना जिनगी उनुका लेखनी के लोहा सभे मानत रहे। उहाँ के लेखनी भोजपुरी साहित्य के हर विधा में खूब चलल बा। उनुका रहते उनुका लिखलका बहुत कुछ प्रकाशित हो गइल रहल आ ढेर कुछ प्रकाशन के राह जोहत रहल। बाकिर इंतजार ढेर दिन के ना रहल, कनक किशोर जी सक्रियता का चलते चौधरी साहब के कृति लगातार प्रकाशित हो रहल बाड़ी सन । संगही चौधरी साहब के व्यक्तित्व आ कृतित्व के मूल्यांकनों लगातार हो रहल बा। उनुका समकालीन लोग उनुका के व्यक्तिगत रूप से जानत रहल, अइसन लोगन के उद्‌गार आ ढेर लोग चौधरी साहब के उनुका कृतित्व से उहाँ के जनलस आ चौधरी साहब के कृतियन पर आपन विचार दीहलस। ई किताबि 'चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में' 37 लोगन के संस्मरण, समीक्षा आ उनुके कृतियन के मूल्यांकन के संकलन बाटे, जवना के विद्वान संपादक डॉ रामजन्म मिश्र जी के प्रधान संपादकत्व आ सच्चिदानंद जी के सम्पादन के भोजपुरी साहित्य जगत का सोझा सन 2018 में आइल। भोजपुरी साहित्य जगत एह कृति के पुरजोर सोवागतो कइलस।

एक दिन अचके अग्रज कनक किशोर जी के निहोरा आइल कि चौधरी साहब के एगो कवनो कृति के समीक्षा क के भेजी। संजोग बस स्वास्थ्य खराब चलत रहे , जवना का चलते ढेर समय लागल बाकिर चौधरी साहब के कृतियन के पढ़ला के लोभ से बाचल केहुओ खातिर मोसकिल होला , हमरो ला इहे बाति रहे। चौधरी साहब के बिसे में बहुत कुछ जाने–समुझे खातिर हमरा ई किताबि ' चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में' सभेले मुफीद बुझाइल । फेर पूरे मनोयोग का संगे किताबि से साक्षात्कार शुरू भइल। चौधरी साहब के लेखन के अलग–अलग आयाम से परिचित होखे क मोका भेटाइल।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी एगो स्थापित एकांकीकार रहनी। उनुका दर्जन भर एकांकीयन से गुजरला का बाद डॉ तैयब हुसैन 'पीड़ित' जी उनुका दूगो एकांकी देवता आ धर्मी के आधार बना के उनुका एकांकी लेखन शैली के निष्पक्ष मूल्यांकन कइले बानी। एगो एकांकीकार का रूप में चौधरी साहब के एकांकी लेखन क एहसे निष्पक्ष मूल्यांकन कइल कठिन काम बाटे। एह तरह के विवेचना बहुत कमे भेंटाला। अक्सरहाँ समीक्षक लोग खाली धनात्मके पक्ष उकेरेला, बाकिर 'पीड़ित' जी सकारात्मक आ नकारात्मक दूनो पक्ष बड़ सहज ढंग से निरूपित कइले बाड़ें।

भोजपुरी गजल के विकास में चौधरी साहब के जोगदान के चर्चा डॉ ब्रज भूषण मिश्र जी कइले बानी । अपना लेख में डॉ मिश्र चौधरी साहब के गजल लेखन पर भोजपुरी के नामचीन गजलगो जगन्नाथ जी के टिप्पड़ी के उजागिर करत ओकरे साँच के निरूपित कइले बानी। चौधरी साहब के पहिल गजल संग्रह के प्रकाशन आ हिन्दी में दुष्यंत कुमार के गजल संग्रह के प्रकाशन के एकही समय–काल रहे । दुष्यंत कुमार हिन्दी गजल के जइसे यथार्थ के धरातल पर उतारत आम मनई के सुख–दुख से जोड़ के सभका सोझा ठाढ़ कइलें, उहे काम चौधरी जी अपना भोजपुरी गजलन के हथियार बना के करे लगलन। डॉ ब्रज भूषण मिश्र जी एकरा पक्ष में कई गो गजलन के शेर से उद्धृत कइले बानी। उहाँ के चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी गजल विधा के आगु बढ़ावे में कइल जोगदान के न भुलाए जोग मनले बानी।

डॉ रामजन्म मिश्र जी के संस्मरण 'भोजपुरी भाषा के सजग सिपाही' चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व कई अनछूअल पहलू के उजागर करि रहल बा। भोजपुरी भाषा साहित्य खातिर कुछ करे के प्रेरणों दे रहल बा। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी जीवनवृत्त पर डॉ स्वर्णलता जी विस्तार से परकास डलले बानी। डॉ स्वर्ण लता जी उहाँ के बेटी बानी, त एहसे पुष्ट जानकारी कही अउर से मिललो संभव ना होखी। चौधरी साहब के लेखनी भोजपुरी के हर विधा पर चलल बा, जवना के भोजपुरी साहित्य जगत में सभे सवीकारो करेला। एही का चलते लेखिका चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के श्री दुर्गा शंकर सिंह 'नाथ' के समकक्ष मनले बानी। आनंद संधिदूत जी के ई एगो

संस्मरण ह 'उत्साह वर्धक चौधरी जी', जवना में चौधरी जी के एगो इतर व्यक्तित्व निखर के सोझा आ रहल बा। भोजपुरी में पसरल गोलबंदी आ गिरोहबंदी से अलग नवहा लिखनिहारन के उत्साहित करे वाला बेकती। सुरेश कांटक जी के संस्मरण ' काहो, चुपे चुपे...' में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के सोभाव आ मत भिन्नता के बात सोझा राखत उनुके भोजपुरी के नेह–छोह आ समरपन के उजागर कइले बानी।डॉ जनार्दन सिंह के संस्मरण ' ठेठ मिजाज के भोजपुरिया सिपाही' चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के अख्खड़ सोभाव आ भोजपुरी समर्पण के उजागिर करि रहल बा। ' अचानक धुंआ बनके उड़ जाइब' भोजपुरी के सुपरिचित आलोचक जितेंद्र कुमार जी के संस्मरणात्मक आलेख हवे, जवन चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के रचना–धर्मिता के पड़ताल करत उहाँ के जीवटता के ऊपर रोसनी डाल रहल बा। लेखक चौधरी जी के लिखल आ पाती में छपल एगो गीत के उहाँ क मउवत के एहसास का रूप में देखावत उनुके अपने बाति पर कायम रहे वाला भोजपुरिया के रूप में निरूपित कइले बाड़न आ संगही उनुका जोगदान के मन से इयाद करत बेर–बेर उहाँ के कमी महसूसत बाड़ें। डॉ प्रेम चंद्र पांडेय जी के मीतवा के न रहला के टीस में अपना बीस बरिस के परिचय के टटोलत चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी कृतित्व आ व्यक्तित्व पर विचार रखले बानी। उहाँ के चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के हठी आ भोजपुरी के एगो समर्पित साहित्यकार का रूप में साहित्य के हर विधा के बढ़न्ति में लागल रहे वाला इंसान का रूप में अपना हिया में बसवले बानी। भोजपुरी साहित्य जगत के ढेर लोगन के चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी साहित्य दर्पण खातिर हेरलें आ सभे के प्रिय बन गइलें। सभे लिखनिहार लोग एह तथ्य पर आपन–आपन सहमति देखवले बा।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' जी के रचना संसार के डॉ स्वर्णलता जी विधिवत साहित्य जगत के सोझा परोसले बानी। उहाँ का एह संसार से गइला का बादो कनक किशोर जी उनुका ढेर रचनन के पुस्तकाकार क के संपादित आ प्रकाशित करा चुकल बाड़ें, आ लगातार ई क्रम चल रहल बा। डॉ रामरक्षा मिश्र विमल जी चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के प्रति आपन भावुक उद्गार देले बानी आ उहाँ के भोजपुरी खातिर एगो प्रेरक शक्ति का रूप में निरूपित कइले बानी। जयप्रकाश विशवासी जी के लीहल साक्षात्कार चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के विचार धारा आ राजनीतिक दलन के रूप–स्वरूप पर उनुका सोच के विस्तार से परोसाइल बा। सच्चिदानंद जी चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के एकाँकी पर बहुत विस्तार से विचार रखले बानी। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के करीब हर एकाँकी संग्रह के जिकिर उहाँ के आलेख में बा। संगही भोजपुरी इनसाइक्लोपीडिया पर आपन नीक–नेवर विचार रखले बानी। हमरा जहां तक धियान बाटे, एह किताबि के लेके कुछ विवादो भइल रहे। सूर्यदेव पाठक 'पराग'जी अपना संस्मरण में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी से मिलल पहिल पोस्टकार्ड के इयाद करत अपना भोजपुरी लेखन के विस्तार क उत्प्रेरक मनले बानी। उनुका कृतियन के चरचा करत चौधरी जी के अप्रकाशित पाण्डुलिपियन के प्रकाशन आ उहाँ के उचित मूल्यांकन के बाति कर रहल बानी। हमरा हिसाब से कवनो भोजपुरी के दिवंगत साहित्यकारन में एह घरी सभेले बेसी चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के अप्रकाशित रचनन पर काम हो रहल बा आ लगातार प्रकाशित हो रहल बानी सन। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के रचनाकर्म के समीक्षित एक–दू गो संकलन हाल में प्रकाशितो हो चुकल बा। कहीं न कहीं एह काम के गति देवे में अग्रज कनक किशोर जी समरपन सराहे जोग बा।

भोजपुरी के विश्वकोष के बहाने मनोकामना सिंह 'अजय' जी चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के 'भोजपुरी साहित्य दर्पण' के अमूल्य कृति बतावत उनुका 'जय भोजपुरी' बोलि के बाति क शुरुवात करे के आदत के सरहले बानी। संगही उहाँ के इहो अपेक्षा बा कि चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के परिवार क लोग उनुका एह परम्परा के आगु बढ़ावस। भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार गंगा प्रसाद अरुण जी अपना संस्मरण 'स्मृति शेष : चौधरी जी' में एगो अप्रिय घटना अउर ओकरा कारन उनुका मन के अवसाद के बड़ हिरदया के चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी सोभाव का चलते अपना उबरला के कारन मनले बानी। चौधरी जी के समरपन, सोभावगत अख्खड़पन का बादो भोजपुरी खातिर जीये–मरे वाला मनई के दीवानगी के बेर–बेर नमन कइले बानी। डॉ जनार्दन सिंह भा गंगा प्रसाद अरुण जी के वोह अप्रिय घटना के जिकिर सार्वजनिक रूप से करे के ना चाहत रहे, बाकिर दूनों लोग एकरा प्रचारित कइले बा। हम एह दूनों लोगन से एह कृत्य पर असहमत बानी।

बरमेश्वर सिंह जी चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के पत्राचार के केंद्र में राखि के उहाँ के ईयादे भर ना कइले बानी बलुक चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के कई गो चिंता आ सहयोगी लोग के आगु बढ़ावे के उताजोगो के उजागर कइले बानी। भोजपुरी साहित्य जगत में बढ़त गोल–गोलबंदी, खेमाबाजी आ चाटुकारिता के चलते सुधी साहित्यकार लोगन के उपेक्षा पर चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के चिंतो पर आपन बात रखले बानी। बरमेश्वर सिंह जी अपना बेबाक लेखन खातिर जानल जात रहनी । उनुका एह शैली के असर एहु आलेख में उभर के आइल बा।

शिवपूजन लाल विद्यार्थी जी के आलेख 'प्रयोगधर्मी चौधरी जी' में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के भोजपुरी प्रेम , असाध्य के साधे क जिद आ ओकरा चलते हिन्दी से लमहर काम के अंजाम तक पहुंचावे क जिकिर ढेर लोगन खातिर गरब से माथ ऊंच करे क हथियार लेखा बा। 'आरोही हजारा', 'सहत्र दल' आ 'अजस्त्र धारा' जइसन विकट साधना के बड़ मनोयोग से एह आलेख क केंद्र बनवले बाड़न शिवपूजन लाल विद्यार्थी जी।

एह किताबि में एगो लमहर विसंगति लउकल, एकही गो आलेख दू नाँव से प्रकाशित भइल बा, सम्पादन के दृष्टि से देखल जाव त बहुते बड़ त्रुटि बा। डॉ ब्रज भूषण मिश्र जी के आलेख आ डॉ स्वर्णलता जी के आलेख के मजमून शब्दशः एकही बा। डॉ ब्रजभूषण मिश्र जी के आलेख के मथेला 'भोजपुरी गजल के विकास में चौधरी कन्हैया के योगदान' बा आ डॉ स्वर्णलता जी के आलेख ' आरोही के रचना : एक नजर' बा। एकरा के संपादक लोग के अनदेखी कहल जाव भा जान बूझ के कइल काम , एकरा के उहो लोग स्पष्ट क पाई।

अरविंद विद्रोही जी के आलेख 'हिन्दी एवं भोजपुरी के स्तम्भ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह' एह पुस्तक में एगो हिन्दी के आलेख बा। ई गेहूँ के रास पर लेंढ़ा के बढ़ावन लेखा बा। एकरा के भोजपुरी में अनूदित कइल जा सकत रहल ह। बाकिर अइसन कवना वोजह से नइखे कइल गइल, सोच के बात बा। हाँ, विद्रोही जी के दीहल विशेषण 'भोजपुरी के चौधरी' हमरा ढेर नीमन लागल।

एही पुस्तक में बरवै ब्रह्म रामायण(प्रकाशन वर्ष–2004) के ब्रजकिशोर जी के लिखल समीक्षा बा। बरवै छंद में लिखल ढेर कठिन मानल जाला बाकिर समीक्षक के एह बाति से सहमत होखल कठिन बा कि 'भोजपुरी में बरवै छंद में नइखे लिखाइल' । हमरा देखे से उहाँ के भोजपुरी में अउर दोसर बरवै छंद में लिखल पुस्तक खोजे के परयास नइखे कइले। कई गो रचनाकर लोगन के पुस्तक बरवै छंद में आइल बा। प्रो. गदादर सिंह जी 'अजस्र धारा' (प्रकाशन वर्ष–2005) के समीक्षा कइले बानी बाकि उहों के ब्रजकिशोर जी बात के समर्थन करत देखात बानी आ अपने समीक्षा में प्रो. गदादर सिंह जी बरवै छंद के एक मात्र रचना कहले बानी।
जबकि भोजपुरी साहित्य सरिता के अक्टूबर–नवंबर –2018 के अंक में हरिराम द्विवेदी जी के पातरि पीर (बरवै छंद) पुस्तक के मनोज भावुक जी के लिखल समीक्षा प्रकाशित बाटे। एही पुस्तक में प्रो . गदाधर सिंह जी के एगो अउर समीक्षा ' अभिमत– कुंअर गाथा' बा, जवना में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के लेखन शैली के सराहल गइल बा।डॉ दिनेश प्रसाद शर्मा जी चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी से भइल पहिल भेंट के अपना संस्मरण के आधार बनवले बानी आ बेगर लाग लपेट के उहाँ के सवीकरले बानी कि ' चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी क भोजपुरी खातिर समर्पण के देखिके भकुआ गइल रहनी'।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के दोसरकी कहानी संग्रह 'सही मंजिल' के समीक्षा विद्वान समीक्षक शंकरमुनि राय 'गड़बड़' जी के लिखल 'अटपटा रास्ता के सही मंजिल' माथेला से बा। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के कहानियन से गुजरत पढनिहार के अपने गाँव–गिराव से जुड़ाव के महसूसियत के बाति समीक्षक सवीकरले बानी। शंकरमुनि राय 'गड़बड़' जी कह रहल बानी कि 'भाव के अनुसार भाषा नइखे उतर पावल'। संग्रह के कहानियन के कुछ अउरो कमी के बेझिझक होके उकेरले बानी। हमरो के इहे लागेला कि समीक्षक के मनराखन पांडे ना होखे के चाही। शिव भजन प्रसाद 'बैरागी' जी 'दूब एक नजर में' माथेला से चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी दोहन के समीक्षा कइले बानी। ई समीक्षा खगावलोकन अस लग रहल बा। कुछ चिठ्टी पतरी आ साहित्यकार लोगन के चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी रचनन पर कइल टिप्पड़ी के एह पुस्तक में संजोवल गइल बा।

''चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में'' किताबि प्रधान संपादक का रूप में डॉ रामजन्म मिश्र जी आ सच्चिदानंद जी चौधरी साहब के ईयाद के संजोवे क गहिराह परयास के सफलता का संगे निभवले बा, जवन सराहे जोग बा। प्रूफ के काम नीमन से होखे के चाहत रहल ह, जवना में कोताही भइल बा। एक्के आलेख माथेला का बदलाव का संगे दू ला.ेगन के नाँव से प्रकाशित भइल बा, जवना से बचे के जरूरत रहल ह। पुस्तक में सम्मानित साहित्यकार ला.ेगन के कुछ दावा खोखला लागल,एकरा के जानकारी के अभाव कहल जाई। पुस्तक भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा बा, पढ़निहार लोगन खातिर एहमें बहुत कुछ बा। एह श्रमसाध्य काम के नमन करत हम चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी स्मृति आ कृतित्व के आगु नतमस्तक बानी। जय भोजपुरी॥

पुस्तक का नाम : चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : इयादों के झरोखा में
प्रधान संपादक– डॉ रामजन्म मिश्र
संपादक– सच्चिदानंद
प्रबंध संपादक– कनक किशोर
प्रकाशन– समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर , बिहार
प्रथम संस्करण – सन् 2018
मूल्य – रु 400/–

❑❑

❍ **कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद**

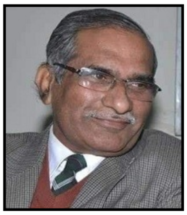

चिन्ता मत करीह, तेज

डा० अमरेन्द्र मिश्र

निशा जब–जब हमरा याद आवेली, हमार सिर उनका भीतर के प्रेम अवरू विश्वास के आगे अपने आप झुक जाला । मन श्रद्धा से भर आवेला । उनकर तपस्या अवरू त्याग के सम्मान में दूनो हाथ अनायास जुट जाला ।

ओह दिन ढेर दिन के बाद निशा से पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सामने एगो दवाई के दूकान पर अचानके भेंट हो गइल । हम आपन दवाई लेबे भीतर घुसत रहीं और निशा एगो बड़ थैला में ढेर सारी दवाई लेले बाहर निकलत रही । दूकान के गेट पर ही भीतर घुसत अवरू बाहर निकलत एक दूसरा के एक दूसरा पर नजर पड़ गइल ।

''अरे, निशा, तू''

''अरे, चाचा, तू''

एक साथ दूनो आदमी चिहा उठल । एक साथ दूनों के चेहरा पर एक सुखद अनुभूति झलक आइल।

'' का निशा, सब ठीक बा नु ? उनका हाथ में दवाई के थैला देखके हम घबड़इले पूछनी ।

''हं चाचा, अब ठीक बा । बाबूजी के तबीयत बहुते खराब हो गइल रहल हा ।'' उनका बायें लगें लकवा मार देले रहल हा । तू त जानते बाड़ कि उ ब्लड प्रेशर के पुरान मरीज हवे । पंद्रह दिन से एहीजे अस्पताल में भर्ती रहले हा । अब हालत में बहुत सुधार बा । आज अस्पताल से नाम भी कट गइल । डाक्टर कहले हा कि अभी कुछ दिन दवा खाये के होई और रोज दूनो समय फिजियोथिरैपी करावे के होई । पूरा ठीक होखे में अभी कुछ समय लागी । उनके दवाई लेबे आइल रहनी हांय उनका के लेके अब घरे जाये के बा ।''

मुड़ी गड़ले इ सब बात धीरे–धीरे कहिके जब निशा हमरा ओर तिकवली त हम देखनी कि उनकर दूनों आंख लबालब भर आइल बाड़ी स अवरू आंख के काजल लपेटले आंसू के दू मोटे धार उनका सुखल गाल पर लुढ़क आइल बा । उ अपना दुपट्टा से लोर पोंछे लगली अवरू धीरे–धीरे सुसके लगली । हमरा त बुझाते ना रहे कि कुछ करीं त का करीं, कुछ कहीं त का कहीं। हम जानत रहीं कि जवन लइकी हमरा सामने खड़ा बीया उ कवनो साधारण लइकी ना ह । प्रेम के प्रति ओह लइकी के संकल्प और त्याग के सामने हम नतमस्तक रहीं । हम बस इ कहिके कि भगवान सब ठीक रखीहें, सुख–दुख त जीवन में लागले रहेला, हिम्मत ना हारे के चाहीं, हम अपना जाने, अपना धर्म के निर्वहण कइनी । सांच पूछीं त ओह स्थिति के बर्दास्त करे के हमरा भीतर हिम्मते ना रहे । हम उनका के ई याद दिला के कि उनकर बाबूजी अस्पताल में उनकर इंतजार करत होइहें अवरू ई सांत्वना देके कि काल्हु–परसो में हम आवतानी उनका घरे, हम उनका के विदा कइनी । उ थैला लेले धीरे–धीरे अस्पताल के ओर चल दिहली । दूकान के गेट पर ही खड़ा हम उनका के तबतक देखत रह गइनी जब तक उ आंख से ओझल ना हो गइली ।

निशा के ओह घरी उमरे का होई ? उहे चौब्बीस–पच्चीस बरिस के होइहें । उनका बी०ए० पास कइला भी चार–पांच बरस त होइए गइल रहे । पटना वीमेन्स कालेज में अंग्रेजी के छात्रा रही । पढ़े में काफी तेज रही । देखे में भी ओइसहिं सुन्दर अवरू ओइसहिं स्मार्ट । उनकर बाबूजी उनका के एगो लाल रंग के स्कूटी खरीद देले रहन । ओही स्कूटी से उ रोज कॉलेज आवत–जात रही । पढ़ाई के अलावे उ खेल –कूद और वाद–विवाद प्रतियोगिता में कतने मेडल अवरू कप जीतले रही । लोग कहे कि निशा प्रोफेसर राज किशोर के बेटी ना, बेटा ह । राज किशोर जी अवरू हम, दूनो आदमी एके कॉलेज में प्रोफेसर रहीं जा । तीन भाई अवरू दू बहिन के बीच निशा दूसरा नम्बर पर रही ।

निशा जब कॉलेज में पढ़त रही तबे उनकर जान–पहचान तेजप्रताप से हो गइल रहे । तेजप्रताप अक्सर प्रोफेसर साहेब से मिले उनका घारे आवत रहन । ओह घरी तेजप्रताप राजनीति शास्त्र में एम०ए० करत रहन अवरू प्रोफेसर साहेब के प्रिय छात्रन में एक रहन । बड़ा मेधावी छात्र रहन । जतने मेधावी ओतने सुन्दर अवरू ओतने चरित्रवान । बड़े–बड़े आंख, घुंघराला बाल अवरू गोरा, लम्बा, पुष्ट शरीर । पचास –सौ के भीड़ में उ दूर से ही हीगर जाये वाला रहन । प्रोफेसर साहेब उनका के खूब मानत रहन ।मन ही मन उ निशा खातीर मन भी बना लेले रहन ।

बड़ा पूजा–पाठ, मन्नत और डाक्टर, अस्पताल के चक्कर लगवला के बाद, बुढ़ारी में, पैंतालीस–छियालिस बरिस के उमर में जाके शिवलखन प्रसाद के अंगना में लइका के किलकारी गूंजल रहे । तेजप्रताप अपना बाप–मतारी के एके संतान रहन । बड़ा दुलरुआ रहन, अपना बाप–मतारी के ।

बाप–मतारी के बड़ा नाज रहत रहे अपना हीरा पर । कांहे ना होखो? बुढ़ापा के उहे त एगो सहारा रहन ओह लोग के। तेजप्रताप भी अपना बाप–मतारी के देवता अस मानत रहन । पास–पड़ोस, हितई –नतई, जान–पहचान के लोग इहे कहे कि भले भगवान केहू के एके बेटा देसु, लेकिन तेजप्रताप अइसन देसु ।
समय के साथ–साथ निशा और तेजप्रताप के मेल–जोल बढ़े लागल । दूनो एक दूसरा से बेहद प्यार करे लागल । पांच–छः महीना में ही दूनों के प्रेम अतना गहरा हो गइल जइसे कहल जाला नु कि ' दू देह, एक प्राण'। त ओह लोग के उहे हाल हो गइल रहे । एक दूसरा के बिना आपन जिन्दगी के बारे में सोच के ही दूनो आदमी सिहर जात रहे । एक अज्ञात भय से कांप जात रहे । तेजप्रताप अगर शरीर रहन त निशा उनकर आत्मा रही । निशा अगर शरीर रही त तेजप्रताप उनकर आत्मा रहन । आत्मा के बिना शरीर मृत रहे त शरीर के बिना आत्मा सूक्ष्म । दूनो एक दूसरा के पूरक हो गइल रहे । दूनो एक–दूसरा में समा गइल रहे । ओह लोग के बीच के प्यार, वासना के धरातल से कहीं बहुत ऊपर उठ चुकल रहे । अइसन प्यार भाग्य से ही केहू–केहू के नसीब होला । दूनो में शायद पूर्व जनम से ही कवनो संबन्ध रहे ।

ओह दिन तेजप्रताप अवरू निशा शाम के बहुत देर से नदी किनारे एकान्त में बइठल रहे लोग । दूनो अपना भावी जीवन के सुखद सपना के साकार होखे के कल्पना में डूबल रहे । उ कल्पना जवन दूनो के गुदगुदावे लागल रहे । शाम के समय, चारों तरफ शान्ति पसरल रहे । बस कभी–कभी मछली के कूदला के आवाज सुनाई पड़ जात रहे । पूरा दुनिया से दूर, दू प्राणी बस अपना दुनिया में डूबल रहन ।

तेजप्रताप अवरू निशा खातीर त ओह घरी समय रूक गइल रहे, बाकि घड़ी त ना रूकी नु । अचानक तेजप्रताप के नजर घड़ी पर पड़ल । "अरे बाप", तेजप्रताप के मुंह से अचानक निकल पड़ल । नव बजे जात रहे । दूनो तड़फड़ाइले उठल । तेजप्रताप निशा के अपना मोटर साइकिल से उनका घरे छोड़ दीहले । निशा के घर, तेजप्रताप के घर के रास्ता में ही पड़त रहे । मोटरसाइकिल से उतरते निशा नजर झुकवले, शरमात, एक हल्का मुस्कान के साथ तेजप्रताप से कहली –" पापा कहत रहन कि उ काल्हु तहरा बाबूजी से हमनी के शादी के बारे में बातचीत करे जइहें ।" इ कहिके उ दूनो हाथ से मुंह तोपले, लजइले, दौड़त अपना गेट में घुस गइली । पीछे मुड़के भी ना देखलि । तेजप्रताप कुछ देर तक ओहीजे खड़ा–खड़ा ओह लइकी के भोलापन पर मुस्कात रहि गइले ।

निशा के जिन्दगी में एक अजीब तरह के बदलाव आ गइल रहे । निशा अब उ निशा ना रह गइल रही । उ तेज–तर्रार लइकी अब बहुत शर्मीली हो गइल रहे । कवनो विषय पर अपना तर्क से केहू के निरुत्तर कर देबे वाली लइकी अब अधिकतर मौन रहे लागल रहे । उ अल्हड़ स्वभाव के लइकी, बात –बात पर छोट भाई–बहिन के नसीहत देबे वाली लइकी, अब ओह लोग के बड़ गलती के भी नजरअंदाज करे लागल रहे । घर में हमेशा कुछ ना कुछ करत रहे वाली लइकी, अब या त घंटों मुंह ढक के सुतला के नाटक करत कल्पना–लोक में उड़े लागल रहे या घंटों छत पर अकेले बैठ तेजप्रताप के साथ बितावल एक–एक पल के याद करके कभी मुस्काये लागत रहे त कभी लोर बहावे लागत रहे । खाए–पीए में अतना ना–नुकुर करे वाली लइकी अब जवने मिल जात रहे, जबे मिल जात रहे, चुपचाप खा लेत रहे । घर के कवनो आदमी ओकरा से अगर कभी ऊंचा आवाज में बोले त ओकर आंख भर आवत रहे । लइकी जे पराया होखे लागल रहे ।

दूसरा तरफ निशा के जिन्दगी में तेजप्रताप के अइला से उनकर दिल के बगिया हारसिंगार के खुशबू से महके लागल रहे । अपना भावी जीवन के रूप–रेखा ओह लइकी के नजर में अब धीरे–धीरे उभरे लागल रहे । तेजप्रताप के साथ मिल के आपन एक प्यारा संसार बसावे के सपना अब आकार लेत नजर आवे लागल रहे । समय अंगड़ाई लेबे लागल रहे । जीवन–बगिया के बंद कलियन के पंखुड़ी अब खुले लागल रहे । जिन्दगी विंहसे लागल रहे। लइकी अपना प्रियतम के होखे लागल रहे ।

बिआह के दिन डेढ़ महीना बाद के रखाइल। तेजप्रताप हमेशा तिलक–दहेज के खिलाफ रहत रहन । एह बात के उनकर बाबूजी–माई भी अच्छी तरह जानत रहे लोग । एह से तिलक–दहेज के कवनो झंझटे ना रहे ।

बिआह ठीक भइला से सबसे खुश अगर केहू रहे त उ रही तेजप्रताप के माई । खुशी से त उनकर गोड़ जमीन पर रोपाते ना रहे । कवनो काम में अब उनका असकत ना लागत रहे । घुटना के दर्द से हमेशा कराहत रहे वाली ओह बूढ़ औरत में पता ना कहां से अचानक अतना शक्ति आ गइल रहे । दर्द पता ना कहां छूमंतर हो गइल रहे । उनका अंचरा में त खुशी समाते ना रहे । ओह दिन बगल के पंड़ाईन से कहे लगली – " ए बहिनी, अब हमहुं पतोह उतारब हो, हमरो घरे लगन लागी हो, हमरो घर अब गुलजार होई हो।" और इ कहिके खुशी में उ रोवे लागल रही । अंचरा से आपन लोर पोंछे लागल रही ।

तेजप्रताप के बाबूजी भी ओतने खुश। उनका चेहरा पर भी खुशी ओइसहिं झलकत रहे

बस उ छलकत ना रहे । दूनो आदमी पहिले के बात याद करके कि कइसे उ लोग पूरा आस छोड़ देले रहे अवरू ओकरा बाद तेजप्रताप के जन्म भइल रहे, भगवान के लाख–लाख शुक्रिया अदा करे लोग । आज तेजप्रताप ना रहीते त हमनी के बुढ़ापा कइसे कटीत । के देखे वाला रहल हा हमनी के । भगवान के ई कृपा ही त बा कि आज इहो दिन आ गइल क घर में बहू आ रहल बीया ।

बिआह के तैयारी में बुझईबे ना कइल, एक महीना कइसे बीत गइल । एने अपना चिरमिलन के तैयारी में अपना–अपना घरे व्यस्त रहला के वजह से निशा अवरू तेजप्रताप के मिलल–जुलल भी कुछ कम हो गइल रहे ।

ओह दिन सबेरे से ही शादी के कुछ छोट–मोट काम लेके अवरू मुख्य रूप से शादी के कार्ड बांटे तेजप्रताप अपना एक साथी रमेश के साथ मोटरसाइकिल से निकलल रहन । लौटे में काफी देर होखे लागल रहे । शाम के पांच बज गइल रहे । तेजप्रताप के माई घबड़ाये लागल रही ।

"पता ना बबुआ अभी तक कांहे ना लौटके अइले । सबेरे नाश्ता में उहे बस मुठ्ठी भर चिउरा दही खा के निकलल बाड़े । दिन भर के भूखल–प्यासल बाबू के पेटवा का कहत होई।" तेजप्रताप के मतारी कहली ।

" तू बेकारे चिन्ता करत रहेलु । अरे, उनका आशियाना नगर अपना फूआ किंहा भी जाये के रहल हा । ओहीजे खा लेले होईहें । फिर एह सब काम में देर लगबे करेला । तू चिन्ता मत कर । उ आवते होईहें ।" तेजप्रताप के बाबूजी कहले । लेकिन भीतरे–भीतर चिन्ता से उनको मन भारी होखे लागल रहे ।

करीब सवा पांच बजे टेलिफोन के घंटी बाजल । दौड़ के शिवलखन बाबू फोन उठवले ।

" हेलो, हेलो, कौन बोल रहे हैं?" ओने से आवाज आइल ।

" मैं, शिवलखन प्रसाद "

" देखिए, आप जल्दी से राजापुर पुल के पास नरेश ट्रोमा अस्पताल के एमरजेन्सी वार्ड में आ जाइए । आपके लड़के का एक्सिडेन्ट हो गया है । उनके थैले में रखे शादी के कार्ड से आपका फोन नम्बर मिला है ।"

शिवलखन बाबू आलमारी में जतने रुपया रहे, लेते, बेतहाशा कुर्ता के पाकेट में रखत, बाई के झोंक में घर से बाहर निकलले । पत्नी के पूछला पर उ अतने कह पवले कि तेजप्रताप के एक्सीडेन्ट हो गइल बा । जात बानी राजापुर पुल, नरेश ट्रोमा अस्पताल । अस्पताल पहुंचते उनका पीठीए पर उनकर पड़ोसी, राम कृपाल पान्डे अवरू शिवजी महतो पहुंचल लोग । तेजप्रताप के माई से एह घटना के जानकारी मिलते ही उ लोग भी दौड़ पड़ल रहे । एमर्जेन्सी वार्ड में घबड़इले, हांफते जब डाक्टर से पूछल लोग त डाक्टर कहले – " अफसोस, हमलोग उन्हें बचा नहीं पाये । इतना भयंकर एक्सीडेन्ट हुआ था और इतना खून बह गया था कि यहां पहुंचते ही उनकी मृत्यु हो गयी ।"

अतना सुनते शिवलखन बाबू ओहीजे काटल पेड़ के तरह धड़ाम से गिर पड़ले । उनका दांत लागि गइल ।

देखते–देखत शिवलखन बाबू आ उनकर पत्नी के दुनिया उजड़ गइल । ओह लोग के सपना टूट के चकनाचूर हो गइल । जवना के सहारे बुढ़ापा काटे के रहे, उ लाठिए टूट गइल । बैसाखिए केहू लेके भाग गइल । आस अपने निराश हो गइल ।

' हे भगवान, का इहे दिन देखावे खातीर ओह दिन हमरा घरे सोहर गववले रहल । जब तहरा लेईए लेबे के रहे त दिहल कांहे, हे भगवान ।' दूनो आदमी खूब डहक–डहक के रोवे लोग । पास–पड़ोस के लोग आ हित–नाता हिम्मत करके पास जाए और ओह लोग के ढ़ाढस बढ़ावे के कोशिश करे । बाकि कवनो खास असर ना होखे । बहुत लोग के त हिम्मते ना करत रहे, ओह लोग के पास जाए के अवरू ओह लोग से कुछ कहे के ।

ओने प्रोफेसर साहेब के शादी के चहल–पहल वाला घर में मातम छा गइल रहे । निशा के त रो–रो के बुरा हाल रहे । उनकर त दूनो आंख से लोर के धार रूके के नामे ना लेत रहे । रोअत–रोअत दूनो आंख सूज गइल रही स । उनका शरीर से आत्मा निकल गइल रहे । उ निष्प्राण हो गइल रही ।

निशा के नजर के सामने अब चौबीसो घंटा तेजप्रताप के चेहरा नाचत रहे । उनका कान में चौबीसो घंटा तेजप्रताप के माई–बाबूजी के कराह सुनाई पड़त रहे । अक्सर उनका लागे कि तेजप्रताप सामने खड़ा बाड़े, मुस्करा रहल बाड़े और कह रहल बाड़े – 'अरे पगली, हम त आधे नु एहीजा आइल बानी । हमार आधा त ते ओहीजे बाड़ीस ।' इ सुनके निशा भावुक होके जोर–जोर से सिसके लागत रही । तेजप्रताप के प्रति उनकर प्यार पहिले से और गहरा होत जात रहे ।

ओह दिन पता ना, उनका दिमाग में का आइल । उ अपना कमरा से निकल के अपना पापा–मम्मी के कमरा में गइली । दूनो आंख लोर से भरल, रोअत–रोअत चेहरा पूरा सूजल ।ओह घरी पापा–मम्मी चुपचाप अपना पलंग पर उदास

बइठल रहे लोग। उ जाके धीरे से पापा–मम्मी के बगल में बईठ गइली । बेटी के बईठते मम्मी के कंठ फूट गइल । पापा कइसहुं अपना के सम्हाल लेले ।

'' पापा ''

'' हां बेटी''

'' तू हमरा खुशी खातीर का का ना कइल । आजतक तू हमार हर इच्छा पूरा कइल । आज तहरा से एगो विनती बा, पापा । प्लीज, ना मत करीह । एकरा बाद हम तहरा से कुछ ना मांगबि । बस हमार इहे विनती स्वीकार कर ल, पापा । कहत–कहत अपना पापा के जंघा पर सिर रखके लेट गइली । करीब दस–बारह दिन तक अकेले रहत–रहत आज पापा के जंघा पर सिर रखते उनका बड़ा सुकुन मिलल ।

'' कह बेटी'', बेटी के माथा सहलावत रूंधिअइला स्वर में पापा बोलले ।

'' पापा, आज तेजप्रताप के माई–बाबूजी पर का बीतत होई । ओह लोग के त देखे वाला अब केहू नइखे । ओह लोग के त जिनगिए उजड़ गइल । अपना माई–बाबूजी के तेजप्रताप बड़ी सेवा करत रहले हा । अक्सर हमरा से कहसु कि हमनी के दूनो आदमी रहब जा त बुढ़ापा में माई–बाबूजी के खूब सेवा करब जा । ओह लोग के कवनो तकलीफ ना होखे देब जा ।''

अतना कह के उ थोड़ा देर चुप हो गइली । फिर बोलल शुरू कइली –

'' पापा, हम ओही लोग के साथ, ओह लोग के बहू बनके रहबि । ओह लोग के देख–रेख करबि । ओह लोग के तेजप्रताप के कमी के अगर कुछ भी भारपाई हमरा से हो पायी त हम आपन जीवन सुकलान समझबि । एह से तेजप्रताप के आत्मा के शान्ति मिली अवरू हमरा खुशी भी ।''

निशा के ई प्रस्ताव सुन के पापा–मम्मी अचम्भित हो गइल लोग । ओह लोग के जवाब के बिना प्रतीक्षा कइले उ फिर बोलल शुरू कइली –

'' आ पापा, अइसहुं त तू हमरा के केहू दोसरे के घरे नु भेजब । अपना पास त हमेशा रखब ना । फिर मान ल कि ई घटना तेजप्रताप से शादी के बाद हो जाइत, तब का होईत । पापा, तहरा गोड़ पर गिरत बानी । हमार ई बात मान ल अवरू हमरा के खुशी–खुशी विदा कर द ।''

निशा के पापा–मम्मी बहुत देर तक ओहीजे चुपचाप बइठल रह गइल लोग । अपना मन के बात कह देला पर निशा के भी मन हलुक हो गइल रहे और फिर ओतना रात के जागल, पापा के गोदी में ही उनका नींद लाग गइल । कुछ देर बाद सुतले में ही उनका सिर के नीचे तकिया रख के, उनका के चादर ओढ़ा के बहुत देर तक पापा–मम्मी अपना बेटी के निहारत रहि गइल लोग ।

दूसरा दिन शाम के प्रोफेसर साहेब और उनकर पत्नी शिवलखन बाबू के यहां गइल लोग । एक दिन पहिले ही तेजप्रताप के कीरीया खतम भइल रहे । उ लोग शिवलखन बाबू के निशा के इच्छा से अवगत करावल । आ इहो कहल कि अगर निशा के ई इच्छा पूरा ना होई त उ लइकी भीतर से टूट जाई । जीयते मर जाई । शिवलखन बाबू त शुरू में हिचकिचइले, पर प्रोफेसर साहेब के बहुत निहोरा कइला पर मान गइले आ कहले –

"प्रोफेसर साहेब, तेजप्रताप त ओह जन्म के हमनी के बैरी रहले । हमनी से मोह–माया बढ़ा के, हमनी के अकेला मझधार में छोड़ के आपन बैर निकाल के चल गइले । इ लइकी, जइसन हमरा बुझाता, ओह जन्म में हमनी के बेटा रहे ।'' बोलत–बोलत उनकर गला रूंधिया गइल आ दूनों हाथ से मुंह तोप के सुसके लगले ।ओकरा तीसरा दिने शिवलखन बाबू अइले आ निशा के विदा करा के लिया गइले । संयोग देखीं कि इ उहे दिन रहे जवन शादी खातीर दिन रखाइल रहे । थोड़े ही दिन में निशा उ दूनो आदमी से घुल–मिल गइली । उ लोग भी निशा के अपना बेटी समान मानत रहे ।

आकाश में अनेक तारा के बीच निशा एक तारा के इंगित कर लेले रही । उनका लागे कि उ तेजप्रताप हवे आ तारा बन के नीचे झांक रहल बाड़े । निशा छत पर जाके ओह तारा के गौर से निहारसु आ कहसु –– '' चिंता मत करीह, तेज । हम बानी नु ।''

निशा से जाहि दिन दवाई के दूकान पर भेंट भइल रहे ओकरा दूसरे दिन हम उनका कीहां गइल रहीं । शिवलखन बाबू के हालत में बहुत सुधार रहे, जइसन उनकर पत्नी और निशा बतवली । बहुत देर तक बातचीत भइल ।

तीन–चार बरिस विदेश में रहला के बाद जब हम वापस अइनी त पता चलल कि निशा एम०ए० कइके एगो कॉलेज में पढ़ावे लागल बाड़ी । अतने ना, शिवलखन बाबू निशा के विवाह बड़ा धूम–धाम से एगो बड़ा ही सुन्दर और होनहार लइका जवन डीप्टी कलक्टर भइल रहे, से कर देले रहन । निशा त पहिले शादी खातीर तैयार ना होत रही, पर शिवलखन बाबू के बहुत समझवला –बुझवला पर एह शर्त पर तैयार हो गइली कि उ ई घर छोड़ के ना जइहें । लइका भी ओही घर में ओही लोग के साथ रही । बाप–मतारी के ना रहला के वजह से लइका के एह पर कवनो आपत्ति ना भइल । कन्यादान शिवलखन बाबू और उनकर पत्नी अपने कइल लोग ।

❑❑

❍ **पटना (बिहार)**

बुचिया

सविता गुप्ता

"आईं,भौजी !बइठी।"प्लास्टिक के कुर्सी आगा रख के आशा देवी माटी के घड़ा से पानी निकाल के शीला भौजी के देवे लगली।
"आरे!हमार मन त इ खबर सुनकर उदास हो गइल ।का जरूरी बा मितवा के संगे तहरा के दिल्ली जाएके ?"

पड़ोस के शीला देवी और आशा देवी दुनो लगभग आगे पीछे बियाह कर के डुमरावँ में आइल रहीं ।दुनो घर में दुखा सुखा से लेकर एगो अजीब तरह के लगाव सब के बीच में अभी तक चलल आवता ।हालाँकि जाति में शीला देवी ब्राह्मण त आशा देवी तेली समाज के बाड़ी ,लेकिन जातिय भेद भाव के हावा इ दुनो परिवार में तनिको नइखे लागल ।गाँव के लोग केतनो फोड़े के चहलस , बाकी इ घर के रिश्ता अटूट बा।
"का करी भौजी बुचिया मनते नइखे जिद पर अड़ल बिया हमरा के दिल्ली ले जाएके ।जनते बाड़ू इनका चल जाए से बुचिया तनि विशेष चिंता करऽ तिया।"
"इनका जाए के बाद हम कसहूँ जी लेतीं ३कनियाँ के लक्षण जनते बाड़ू ।बेटा के ऊपर खेत,बधार, दुकान के बोझ बा ।घर से ओकरा कुछो मतलब नइखे ।पोता,पोती के मुँह देख के दिन काट लेती३ लेकिन बुचिया के हमार तबियत के चिंता रहेला३. कहतिया दिल्ली में बढ़िया डॉक्टर से देखा देब।"
"कनिया ,सब एहिजा संम्हार ली३तू त बड़ले बाडू३ दु महिना में चऽल आइब।"

दिल्ली में एक दू हफ्ता में आशा देवी दिन भर अकेले रहत –रहत उबिया गइली ।मीता सुबह आठ बजे ऑफिस जा के रात आठ बजे घरे आव. स ।दिन भर अकेले घर काटे लागल ।रोज गाँव जाए खातिर बुचिया के चिरवरी मनवनी करऽस ।पर मीता के ले ल माई के सेहत जरूरी रहे ।भौजी के व्यवहार माई के प्रति ठीक ना रहे ।एही से मीता माई के गाँव में ना रखें चाहत रही ।मन लगाए लेल मीता माई के बुनाई,सिलाई करें के कहऽली ।मन मार के आशा देवी बुनाई ,सलाई करके मन लगावे लगली।

एक दिन मीता माई के बनावल क्रोशिया के थाली पोश,फ्रॉक,गिलास कवर के फोटो खींच के यूट्यूब में डाल देली।

दस दिन बाद मीता के एगो दोस्त फोन करके मीता से उ सब क्रोशिया के आइटम किने खातिर इच्छा जतइली।
मीता के खुशी के ठिकाना ना रहऽल।
आशा देवी सुनऽली त कहे लगली "केहु मजाक कइले होई ।बजार में एक से एक बढ़िया सामान बिकाता। हमार के लिही।"
दू दिन बादे मीता के सहेली आशा देवी के बनावल सब चीज ले गइली।
साँझ के मीता के फोन नंबर पर जब सहेली दू हजार रूपइया भेजऽली तऽ मीता के खुशी के ठिकाना ना रहल।
माई के गर्दन पर लटक कर,झूमके मीता कहऽली, "माई,अब तू बिशनेश महिला बन गइलू।"

❑❑

❍ राँची , झारखंड

शालिनी कपूर

उहाँ के नाम

उहाँ के नाम बड़हन बा,
करेजा–काठ बड़हन बा।

बजाई बाँसुरी कईसे,
चुनावी आग लागल बा।

लिखीं पाती में दुख कईसे,
करेजा गम से काँपल बा।

बिना मौसम के बरखा में,
किसानी आजमाइस बा।

घिरल अन्हियार जुल्मन के,
बगावत दिल मे उठ्ठल बा।

कहाँ अब मोल जिनगी के,
रूपईया बाप–माई बा।

❑❑

❍ गौतमबुद्ध नगर, उ0 प्र0

चड़ता

सरोज त्यागी

अवध में बाजे बजनवां हो रामा
जनमे ललनवा।

राजा दशरथ जी क ऊंची पगड़िया,
खुश हो के झूमे सखि सगरी नगरिया
रघुकूल करत गुमनवां हो रामा
जनमे ललनवां।।

गांवों बधइया केहू गावै सोहरवा
जगमग होला सखी घरवा दुअरवा,
झुन झुन बाजे झुनझुनवा हो रामा
जनमे ललनवा।।

केहू चाहे अनधन केहू चाहे सोनवां
केहू के जड़ाऊ हार केहू के कंगनवां
केहू मांगै बस दरसनवां हो रामा
जनमे ललनवां।।

रानी कौशल्या देवी देवता मनावें
माता सुमित्रा आंखी कजरा लगावै
केकई झुलावै पलनवआं हो रामा
जनमे ललनवा।।

2

छुटि जइहैं बाबा के अंगनवां हो रामा,
होत गवनवां ।।

छुटि जइहैं माई हो छुटि जइहैं बाबा
सखिया सहेलियन से टूटि जइहैं नाता,
छुटि जइहैं बहिनी बिरनवां हो रामा
होत गवनवां।।

अम्मा कहेली बेटी हाली हाली अइहा,
बाबा कहेलं बेटी तीजिया खिचड़िया,
भउजी क थोर बाटै मनवा हो रामा
होत गवनवां।।

निबिया के तरे डोला रखि दे कहरवा,
तनी सा उठा दा भइया डोली क ओहरवा।
देखि लेहीं खेत खरिहनवां हो रामा
होत गवनवां।।

❑❑

❍ गाजियाबाद, उ0 प्र0

सौतन भइल बा महंगाई

डॉ राम बचन यादव

सौतन भइल बा महंगाई
गटकि जाले सगरी कमाई।

केतनो कमाय पिया होय नाहीं पूरा
लहे–लहे खरच करें हाल भइल बूरा
केतनो करें चतुराई
गटकि जाले सगरी कमाई।

चूल्हा जरे ना कभौं–कभौं घर में
चना–चबेना होखे कभौं दुपहर में
ईंख जस जिनिगी पेराई
गटकि जाले सगरी कमाई।

दाम बढ़े डीजल जस सावन के घसिया
गैस–पेटरोल भयल गले के फंसिया
नींबू कइलस बेवफाई
गटकि जाले सगरी कमाई।

भइल व्यापार इहां छिच्छा–पढ़ाई
खेती–किसानी गइल कर्ज में पिसाई
अम्मा मरें बिन दवाई
गटकि जाले सगरी कमाई।

पड़ल गरीबी गले कहिआ ले जाई
राजा खाने दूध–भात हमनीं के कमाई
जनता मरे पाई–पाई
गटकि जाले सगरी कमाई।

होले मुनाफाखोरी जमाखोरी जारी
सेठ–साहूकारन के पेट होत भारी
रहल सरकार भरमाई
गटकि जाले सगरी कमाई।

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय इंटर कालेज
चकिया, चंदौली

एगो रहलें भर्तृहरि

डॉ रजनी रंजन

एगो रहलें भर्तृहरि ।जिनकर कहानी राजपाट छोड़ के बैरागी बनला से शुरू होता। तीन गो रचना– नीति शतक श्रृंगार शतक आ वैराग्य शतक आज कवनो पहचान के मोहताज नइखे। मालवा प्रांत (जे आजकल मध्य प्रदेश) के राजधानी उज्जैन में विक्रम संवत के निर्माता राजा विक्रमादित्य दित्य के बड़ भाई भर्तृहरि राजपाट के छोड़ के लेखनी से आपन दोस्ती निभवले निभा वाले एक बार की बात बा राजा के एगो अत्यंत सुंदर लड़की पिंगला पसंद आ गइली उनका। उनके से उनकर बिआह हो गइल। बाकिर पिंगला चरित्र से अच्छा ना रही अपने जाल में भर्तृहरि आ विक्रमादित्य दुनों के फँसा के आपस में झगड़ा शुरु करा देहली। एने एगो दरोगा के देख के आपन रूपजाल में फँसइली। कुछे दिन में भर्तृहरि के ओकर चरितर बुझा गइल।उ अपना भाई बिक्रम के भी संकेत कइलन बाकिर उ धेयान ना देहलन।

उनकर भ्रम तब टूटल जब ऊ उनकरा चरित्तर पर दोष मढलस। दु:खी होके राजा बिक्रमादित्य उज्जैन छोड़ दिहले।

कुछ दिन तक सब ठीक चलल। भतृहरि के लागल कि मति बदल रहल बा। मन के मीत के कमी कहां लउकेला? एक दिन एगो बाभन दरबार में आके राजा के जवानी के अमर करे वाला एगो फल देहलन आ कहलन कि इस फल खइला से कभी बुढापा ना आई। राजा भतृहरि के आपन प्रिय पत्नी के ऊपर फिर प्रेम उपरल।ऊ आपन पिंगला के उस पर दे देहलन ताकि उनकर सौंदर्य कभी कम होखे। पर "तिरिया चरित्तर तो दैवो ना जाने"एके रानी सिद्ध कर देहली।ऊ फल अपने ना खाके दरोगा साथी के देहली। दरोगा भी पिंगला से दस कदम आगे रहलें।उहो ई फल ले जाके एगो बेश्या के दे देहले।उ बेश्या समझदार रहली।मने मन कहलई–ई फल त अमर कर दीदी आ तब त हम पाप कर्म से कभी छूटिये ना सकब।ई फल अगर राजा भतृहरि जी खाइब तो धरती पर एगो ईमानदार राजा के नाम अनन्त हो जाई।ई सोच के ऊ फल लेके राजा के दरबार गइली। राजा के जब फल देहली तो उ भक्क रह गइले। आपन गुप्तचर भेज के पता लगवलन तो सब माजरा समझ आइल। फेर ऊ फल राजा खुदहीं का लेहलन ।मन उनकर बैराग से भर गइल । ओकरा बाद साहित्य के सहारा लेके आपन अनुभव लइखलन। सबसे पहिले श्रृंगार शतक लिख के प्रेम के गति पर आपन बिचार रखलन फिर वैराग्य शतक लिख के आपन बैरागी जीवन के अनुभव लिखलन फिर अंत में नीति शतक लिख के ज्ञान आ अनुभव दुनो के स्पष्ट करके जीवन के बात साझा कइलन।

(हिन्द पाकेट बुक्स,प्रकाशन से वैराग्य शतक के भूमिका भाग के अनुवाद)

❑❑

❍ घाटशिला, झारखंड

बिनु रे पनहिया

भरत चलेले चित्रकूट हो रामा
बिनु रे पनहिया..!

सुरुज किरनिया भइली सयनिया ,
धरती तपेली अगिनिया हो रामा
बिनु रे पनहिया..!
झलका झलके ,काट कुस गड़के
गोड़वा भइल लुहानवा हो रामा
बिनु रे पनहिया..!
अमिय प्रेम रस भरल हिया
लागेला सीतल चंदनवा हो रामा
बिनु रे पनहिया..!
अरथ न धरम काम न निरवनवा,
जनम –जनम अनुरागवा हो रामा
बिनु रे पनहिया..!
भायप भगति भरत अचरनवा,
धरती पर गिरेले लकुटिया हो रामा
बिनु रे पनहिया..!
बिनु अधरवा होइ नतोसवा,
किरिपा करि दिहनी पँवरिया.हो रामा
बिनु रे पनहिया..!
सादर भरत रखे सीसवा
इहे हवे भगति के मूरवा हो रामा
बिनु रे पनहिया..!

❑❑

❍ बेतिया, प0 चंपारण

केदार पाण्डेय से बाबा रामोदार दास आ फेर राहुल सांकृत्यायन कइसे बन गइलें राहुल बाबा

मनोज भावुक

पहिला बार जब हम जननी कि राहुल बाबा भोजपुरियो में किताब लिखले बाड़न, उहो नाटक ... उहो एगो–दुगो ना, आठ गो त विश्वासे ना भइल. राहुल बाबा माने महापंडित राहुल सांकृत्यायन.

बात 1996 के ह. तब हम बिहार आर्ट थियेटर, कालिदास रंगालय, पटना में नाट्यकला डिप्लोमा के छात्र रहीं. चुकि लेखन में भी रुचि रहे त नाटक में शोध करे लगनी. स्पेशली भोजपुरी नाटक में, जवन दू साल बाद भोजपुरी अकादमी पटना के पत्रिका में एगो लमहर लेख ' भोजपुरी नाटक के संसार ' के रूप में छपल. ओही शोध के दौरान ई बात पता चलल आ पता का चलल... बिहाने भइला भोजपुरी साहित्य के पर्याय गुरुवर आचार्य पाण्डेय कपिल जी से राहुल बाबा के लिखल तीन गो नाटक मिलियो गइल पढ़े खातिर– नइकी दुनिया, जोंक आ मेहरारुन के दुर्दशा. ई तीनों नाटक भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका में छप चुकल रहे.

राहुल बाबा के भोजपुरी नाटक पर त बात करबे करब. पहिले उहाँ के भोजपुरी आ भोजपुरियापन पर बात करेम. उहाँ के घुमक्कड़ी स्वभाव आ हर भाषा के जाने–सीखे के ललक आ चाव पर बात करेम. साथ हीं इहो कि आखिर 09 अप्रैल 1893 ई. में आजमगढ़ के पन्दहा गांव में जनमल केदार पाण्डेय, केदार पाण्डेय से बाबा रामोदार दास आ रामोदार दास से राहुल सांकृत्यायन कइसे बन गइलें.

बिहार के छपरा जिला में एकमा के पास एगो जगह बा परसागढ़. 'परसागढ़' पुरान संत प्रसादी बाबा के नाम पर बा. परसागढ के मठो बहुते प्राचीन हऽ. एही मठ में महापंडित राहुल सांकृत्यायन के नाम केदार पाण्डेय से 'बाबा रामोदार दास' धराइल. ई कइसे भाई ?

केदार पाण्डेय से बन गइलें बाबा रामोदार दास

एकमा के प्रोफेसर राजगृह सिंह बतावेनी कि परसागढ़ मठ के महंथ बाबा लक्ष्मण दास महंथ चिंतित रहत रहनी, काहे कि युवा साधु रामोदार दास के मृत्यु हो चुकल रहे आ उनके नाम से मठ के जमीन–जायदाद रहे. युवा साधु के महंथी देत समय बाबू लोग (जमींदार, परसागढ़) नाखुश हो गइल रहे. मठ के जमीन–जायदाद पर बाबू लोग मुकदमा ठोक देले रहे. मठ के जमीन–जायदाद के सुरक्षा खातिर एगो अइसन युवक के तलाश रहे, जे तेज–तर्रार अउर महंथी के काबिल होखे.

नयका मंदिर खातिर पत्थर खरीदे बाबा लक्ष्मण दास महंथ वाराणसी गइल रहनी. ओहिजा के महंथ के एगो छावनी रहे, जवना में संस्कृत के अध्यापन भी होत रहे. अचानके बाबा लक्ष्मण दास के धेयान एगो अइसन 19 वर्षीय युवक पऽ गइल जवन ओहिजा संस्कृत पढ़े आइल रहे अउर ओकरा साधु बने के मनो रहे. ऊ पंडित राजकुमार जी के माध्यम से आइल रहे. ओह युवक के नाव केदार पाण्डेय रहे अउर उ आजमगढ़ के पंदाहा के रहे वाला रहे. बाबा लक्ष्मण दास के संपर्क में आ के अउर पंडित राजकुमार के कहला पऽ केदार पाण्डेय छपरा परसागढ़ चले खातिर तइयार हो गइले. महंत जी केदार पाण्डेय के छपरा लेके अइनी आ 2 दिन रुक के तीसरा दिने एकमा होत परसागढ़ पहुंचनी. केदार पाण्डेय के मठ में ओही चबूतरा प बइठावल गइल, जवना चबूतरा पऽ रामोदार दास बइठत रहनी. एकादशी, 1912 के केदार पाण्डेय के नाम बदलके रामोदर दास कऽ दिहल गइल. शुभ मुहूर्त में वैदिक रीति से उनकर नामकरण संस्कार कइल गइल आ उनका से कहल गइल कि आज से रउरा रामोदार दास साधु हो गइनी. जमीन–जायदाद रउरे नाम से बा. ओकर देखभाल करे के होई अउर मुकदमा के सगरी कागजात रउरे देखे के होई।

परसागढ़ मठ के महंथी स्वीकार ना कइलें बाबा

बाबा के महंथी करे के ना रहे. जमीन–जायदाद के लालच रहे ना. सब सुख–सुविधा के बावजूद ऊ उहां से भाग के दक्षिण चल गइलन आ मठ से संबंधित स्थानन के भ्रमण करे लगलन. महंथ लक्ष्मण दास के निहोरा पर ऊ 1913, 1914, 1917 अउर 1918 में परसागढ़ आवत रहलन अउर मुकदमा के देखभाल करत रहलन. देश के पूरा तीर्थ, मठ से जुड़ल स्थानन के घूमत रहलन. आगरा में जाके 1915 में आर्य समाजी हो गइलन. एक दिन महंथ जी के तार पढ़के ऊ सर्वे के काम से मठ के जमीन के देखभाल करे खातिर परसा आ गइलन. बाकिर महंथी स्वीकार ना कइलन आ महंथ लक्ष्मण दास के मर गइला के बाद मठ में आइल भी ना के बराबर हो गइल. प्रोफेसर राजगृह सिंह बतावेनी कि ओकरा बाद परसागढ़ मठ से कमे नाता रहल उहाँ के बाकिर 1993 में जब कमला जी (बाबा के पत्नी) एकमा आइल रहली त कहत रहली कि बाबा इहाँ के लोगन के खूब ईयाद करीं.

11 साल के उमिर में 8 साल के कन्या से

बिआह भइल

गोबर्द्धन पाण्डेय आ कुलवन्ती देवी के संतान राहुल बाबा के लालन–पालन आ पढ़ाई कन्नौल गांव के नाना राम शरण पाठक के देखरेख में 16 साल के उमिर तक चलल. नाना अवक. ाशभोगी पल्टनिहा रहलन, जेकरा देश–विदेश के घ ुमला के अनुभव से बाबा काफी प्रभावित रहस. 11 साल के उमिर में 8 साल के कन्या से बाबा के बिआह कऽ दीहल गइल. पुरान विचार के परिवार में घर–गृहस्थी संभाले खातिर एही तरे लोग शादी–बिआह कर देत रहे. बाबा का मन में समाज का प्रति विद्रोह जागल आ उ 16 साल के उमिर में घर बार छोड़ के बनारस भाग अइलन. इहां दयानंद हाई स्कूल में संस्कृत के शिक्षा लेत रहलन. एही बीच उनकर मुलाकात लक्ष्मण बाबा से हो गइल आ उ अपना साथे ले के परसागढ़ मठ चल अइलन.

जेलो गइलें बाबा

1921 में बिहार अइला के बाद गांधीजी के असहयोग आंदोलन के आकर्षण बढ़ल. कादो, गांध ीजी के एकमा बोलावे के श्रेय बाबा के रहे. आन्दा. ेलन में सक्रिय भइला के चलते उनका 6 महिना खातिर बक्सर जेल आ 1923 के आस–पास हजारीबाग सेंट्रल जेल में भी जाए के पड़ल. हजारीबाग सेंट्रल जेल में उ मार्क्सवाद से प्रभावित पुस्तक 'बाइसवीं सदी' लिखलन.

कइसे पड़ल नाम महापंडित राहुल सांकृत्यायन

बाबा 1927 में संस्कृत के अध्यापक होके लंका गइलन आ उहां 1928 में उनका 'त्रिपिटिकाचार्य' के उपाधि मिलल. भारत लौटला पर 1928 में काशी के पंडित लोग उनका के 'महापंडित' के उपाधि से सम्मानित कइल. 30 जुलाई 1930 में बाबा आर्य समाज आ कांग्रेस राजनीति के विचार त्याग के बौद्ध भिक्षु बन गइलन. एह उपलक्ष में उ आपन नाम बदल के 'राहुल सांकृत्यायन' रख लेहलन. बुद्धपुत्र 'राहुल' आ गोत्र 'सांकृत्यायन' मिल के राहुल सांकृ त्यायन हो गइल. तब से दुनिया में इहे नाम प्रचलित भइल.

लंका से लंदन आ लंदन से रूस के यात्रा

1932 में बौद्धधर्म के प्रचार खातिर लंका से लंदन गइलन. यूरोप के यात्रा कके 1933 में लद्दाख लौट के हिमालय, तिब्बत आ मध्य एशिया के यात्रा कइलन. तिब्बत से कई सौ के संख्या में संस्कृत, पाली, प्राकृत आ अपभ्रंश के पाण्डुलिपि लेके अइलन जवन पटना संग्रहालय में सुरक्षित बा. 1937 में ले. निनग्राड (रूस) में प्राचीन भाषा–संस्थान के अध्यापक बन के गइलन आ संस्थान के सचिव एलेना (लोला) से गंधर्व विवाह कर लेलन. 1939 में लौट के भारत अइलन आ सहजानंद सरस्वती का किसान आंदोलन का साथे जुट गइलन. 1939 में छपरा जिला (आज सिवान जिला) के अमबारी में जमींदार के खिलाफ भारत के पहिलका किसान आंदोलन के नेतृत्व कइलन जवना खातिर उनका लाठी, भाला आ जेल सभ मिलल. एशिया, यूरोप के अनेक देश के बार–बार यात्रा कके अपना अनुभव के लाभ लोग के देत रहलन. 24 माह फेर रूस रह के 1949 में राहुल जी भारत लौटलन. 1942 का आस–पास अपना निजी सचिव 'कमला जी' के धर्मपत्नी का रूप में स्वीकार कइलन.

राहुल बाबा के भोजपुरी साहित्य

राहुल बाबा 1948 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सभापतित्व कइलन आ लमहर लिखित भाषण दिहलन जे भोजपुरी के धरोहर बा. साथ हीं उ आठ गो नाटक भोजपुरी में लिखलन जवन 1942 ई. में छपल.

नइकी दुनिया– आजादी के बाद कइसन होई हमनी के दुनिया एह पर फोकस बा.

जोंक– मिल के मालिक, जमींदारन, साहूकारन आ अन्य समर्थ लोग कइसे कमजोर आ गरीब लोग के जोंक बन के चूसता, एही पर फोकस बा.

मेहरारुन के दुरदसा– नामे से साफ बा कि औरतन के शोषण के खिलाफ आवाज उठावत बा ई नाटक.

ई हमार लड़ाई– जर्मनी के खिलाफ जनता के लड़े खातिर प्रेरित करे वाला नाटक.

जपनिया राछछ– जापान द्वारा कोरिया आ चीन पर अत्याचार केंद्र में बा. जापान में बढ़त वेश्यावृत्ति पर भी फोकस बा.

जरमनवा के हार निहिचय– हिटलर के प्रति आक्रोश बा. ओकरा हार के कामना बा.

देस रच्छक– जापान द्वारा बमबाजी से त्रस्त वर्मावासियन के आजाद हिंद फौजियन द्वारा सेवा टहल के प्रशंसा कइल गइल बाटे एह नाटक में.

ढुनमुन नेता– कॉग्रेसी नेता के दोहरा चरित्र के उजागर करत बा इ नाटक. जमींदारी प्रथा स्क्रिप्ट के आधार बा.

दुर्भाग्यवश उनकर लिखल खाली तीन गो नाटक (मेहरारूअन के दुरदसा, नइकी दुनिया आ जोंक) उपलब्ध बा. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका में ई तीनों नाटक के प्रकाशन भइल बा. संस्कृत, पाली, प्राकृत से लेके हिन्दी भोजपुरी तक के दुनिया में राहुल जी समान विचार रखेवाला विद्वान रहस. लोकभाषा के विकास पर उनकर काफी जोर रहे. जहां जास उहें भाषा सीख लेस आ ओही में आपन विचार प्रचार शुरू कर देस. राहुल जी अद्भूत मस्तिष्क वाला व्यक्ति रहस. उनकर लेखन कार्य विचित्र ढंग से चलत रहे. उनका साथे बराबर टाइपिस्ट रहत रहे आ उनकर बोली आ भाषण टाइप होत रहे. अइसन विचार आ चिन्तन के धनी आदमी संसार में दुर्लभ बा.

प्रोफेसर राजगृह सिंह बतावेनी कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन जमींदार लोग का व्यवहार से क्षुब्ध हो के भीष्म प्रतिज्ञा कइले रहस कि जब तक जमींदारी प्रथा के अंत ना होई हम एकमा–परसागढ़ में गोड़ ना राखब. एकर उ निर्वाहो कइलन. छपरा–सीवान आवस बाकिर एकमा ना उतरस. जब जमींदारी के अंत हो गइल त 1956 में राहुल जी के प्रतिज्ञा टूटल आ उ परसागढ़–एकमा अइलन.

राहुल जी स्वतंत्र आ स्वाभिमानी रहस. साम्यवाद में उनका आस्था रहे बाकिर हिन्दी राष्ट्रभाषा बने, एह मुद्दा पर उ 1948 से 1958 तक पार्टी (साम्यवादी) से अलग रहलन. हिन्दी के उनकर सेवा अपूर्व बा. सैकड़ो ग्रंथ कहानी, उपन्यास, इतिहास, शोधग्रंथ आदि हिन्दी में लिख के एह भाषा आ साहित्य के सम्पन्न कइलन. 1959 से 1961 तक लंका के विद्यालंकार विश्व विद्यालय में दर्शन विभाग के अध्यक्ष–अध्यापक रहलन आ उहे विश्वविद्यालय उनका के डी. लिट् के उपाधि देहलस.

14 अप्रैल 1963 में उनके पार्थिव शरीर सदा खातिर एह दुनिया से चल गइल बाकिर राहुल जी के यशस्वी शरीर अमर बा. मरणोपरांत भारत सरकार से उनका 'पद्मभूषण' के उपाधि मिलल.

❑❑

❍ गौतम बुद्ध नगर, (उ0 प्र0)

धंधा

अंकुश्री

महेसर के चिंता में रहत रहस. एक दिन उनकर मेहरारू कहली, ''रउरा पढ़ल–लिखल बानी। हमार बाबूजी त मिडिलो पास नइखन। बाकिर उनकर कमाई आ इज्जत देखते बानी, कतना बा ?'' महेसर के ससुर अपना इलाका के नेता रहस।

मेहरारू के बात महेसर के जंच गइल। ऊ दोसरे दिन गांव के बजार में सब गरीबन के जमा क के एगो बइठकी कइलन। बइठकी में ऊ कहलन, ''हम पंडित जी के बेटा हंई आ तू लोगनी – – –। बाकिर एगो बात सभे केहू जानत बा कि हम सभनी के बनवनिहार एके भगवान हवन। भगवान किहां केहू छोट–बड़ चाहे ऊंच–नीच नइखे। छोट–बड़ भा ऊंच–नीच के ई सब बखेरा समाज के कुछ लोग के मनमानी आ जालसाजी ह। सब आदमी आदमिये ह। जइसन हम अउसन तूं लोग। हम गलती कहत होंखी त कहऽ।''

''ना, रउरा गलती नइखीं कहत, एकदम ठीक कहत बानी।'' कई जना के मुंह से एके साथ निकलल।

''त आज से छोट–बड़ भा ऊंच–नीच के भेद–भाव एह गांव में बरदास्त ना कइल जाई। जतना मजदूरी, ओतना काम।– – –''

महेसर के बात के असर ई पड़ल कि गांव के बड़ेआदमी कहाये वालन के खेत–खरिहान में एक दिन के काम पूरा होवे में चार–चार दिन लागे लागल। ऊ सभे लोग अब महेसर के निहोरा–पाती करे लगलन।

ओने गरीबन में महेसर के लेके बड़ा खुशी रहे। ओह लोग के महेसरे के चलते बेगारी से जान बाच पाइल रहे आ जिनिगी आदमी लेखा हो पाइल रहे। गांव के हर गरीब महेसर के तरहत्थी पर राखे लागल।

देखते–देखते महेसर गांव के नेता बन गइलन। जाल्दिये उनकर नावं दोसरो गांव में होखे लागल आ उनकर नेतागिरी के धंधा फले–फूले लागल।

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी,
सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

कैलाश नाथ शर्मा ''गाजीपुरी''

हाय रे करम

सखी हो हमसे ना होई कटनिया
हम नईहरवा जइबो ना ।।
सखी हो हमसे....

हाथ में लेइके हँसुआ गतार ।
जाये के परता खेत बधार ।।
कसी कसी बड़हन बोझा बन्हाता ।
आवे के परता खरिहान किनार ।।
बोझा के बोझ से कांपे बदनिया ।
हम नईहरवा....

अपने बाबु जी के बोलवाईब ।
आपन सगरो बतिया बताइब ।।
जिनगी माटी भईल हमार ।
नइया फसल मोर मझधार ।।
पियवा निपट गवाँर निपनिहा ।
हम नइहरवा....

जाईं करे जब हम कटनी ।
छयलन सब मारे टिटकारी ।।
बतिया सुनी गुनी रही जाईं ।
खीसी भींजे तन मोर सारी ।।
थर थर कांपेला हो बदनिया ।
हम नईहरवा....

ससुई कहेलीं राखा मान ।
भसुर के खड़ा हो गईल कान ।।
ससुर फुसुर फुसुर बतियावें ।
जाइ चउ कठ के अब मोर सान ।।
गाजीपुरी के ना मानब बचनियाँ ।
हम नइहरवा.....
सखी हो हमसे....

❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

छाया प्रसाद

आई गइले चैत महिनवां

आई गइले चैत महिनवां हो रामा,
पिया नाही अइले।

मोजरा से भर गइल,
अमवां के डरिया।
भोरे भिनसरवां,जे
बोलेले कोइलिया,
भोरे–भोरे निंदवा,उचट जाला हो रामा
पिया नाही अइले

फूलवां से भर गइल,
बाग–बगिचवां
गेहुआ के बलिया,से
लहरेला खेतवां,
बेरि–बेरि रहिया,निहारी ले रामा,
पिया नाही अइले।

चैत्र के महिनवां में,
राम जनम लिहले।
ढोल मजिरा बाजे,
बाजे रे बधईयां।
पिया बिन सून हमरा अंगनवां हो रामा
पिया नाही अइले।

❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

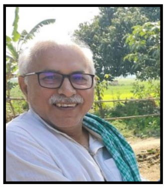

मामा के हरजाई सपना आ उनकर सुख आ बिछोह

डॉ बलभद्र

बहार के 'आरा' में दूगो जितेंद्र कुमार हउवन। दूनो जना के उमिर में अंतर बा, बाकी कुछ बात अइसन बा जे दूनो लोग में कॉमन बा। जइसे कि दूनो जना कवि हउवन आ दूनो जना वाम विचारधारा के हउवन। दूनो में जे उमिर में जेठ बा, ऊ जितेंद्र कुमार डाक विभाग में लंबा समय तक काम क के 'असिस्टेंट डायरेक्टर, पोस्टल सर्विसेज' पद से रिटायर हउवन आ जे तनी कम उमिर के जितेंद्र कुमार हउवन ऊ भाकपा माले के भोजपुर जिला कार्यालय के प्रभारी हउवन। त जे डाक विभाग वाला हउवन, ऊ हिंदी आ भोजपुरी दूनो भाषा में लिखेलन। कविता, कहानी, समीक्षा आ संस्मरण लिखेलन।

एह जितेंद्र कुमार के हिंदी आ भोजपुरी के कुछ किताबो छपल बा, जेकर चर्चा लोग करत रहेला। एह जितेंद्र जी के भोजपुरी कहानी के एगो किताब ह 'गुलाब के कांट'। ओह में एगो कहानी बा 'कलिकाल'। 'कलिकाल' के बारे में लोक में अनेक रकम के बात चलत रहेला। कुछ लोग 'कलयुग' कहेला। कुछ लोग 'कलऊ' कहेला। जब नीति–अनीति के बात होला, झगड़ा के, झंझट के, भाई–भाई के बीच विभेद के, रसम–रेवाज के टुटला के, त लोग कहेला कि 'कलिकाल' ह भाई। एह में इहे सब होई। कुछ नीमनो काम जे होय आ लोक के मानता के अनुकूल ना होय, तबो लोग 'कलिकाल' के उचार करेला। जितेंद्र जी के ई कहानी हमनी के समाज में समिलात परिवार में ऊपर–ऊपर प्रेम के जवन प्रदर्शन होला, ओकर खूब सघन आ व्यवहारिक अध्ययन पेश करत बिया आ एह तरह के दिखावा के फिजूल सिद्ध करत बिया। हम जितेंद्र जी के एह कहानी के पढ़े के कहल चाहत बानी।

जितेंद्र जी के एगो भोजपुरी के कविता ह 'काल्हु वाला चेहरा'। ई कविता 'समकालीन भोजपुरी साहित्य'–18 में छपल बा। कविता छोटहन काया में बड़हन बात ई कहत बिया कि एह तरह के सांच देखे में आ रहल बा कि आदमी के आज के बात आ काल्हु के बात में भारी अंतर देखे के मिल रहल बा। आज आ काल्हु के भाषा, भाव आ व्यवहार में भारी फरक बा। एगो आदमी अब दूगो चेहरा के कहो अनेक चेहरा रख रहल बा। रकम– रकम के मुखौटा। जे सदाचारी लउकल, दुराचारी साबित भइल। राजनीति से लेके धरम–करम के गलियारा में ई साँच खूब देखे के मिल रहल बा। समझे के बात बा कि जइसे हर अब चीज बाजार में बा, वइस. हीं चेहरवो बाजार में बा। कवि इशारा करत बा कि बाजारवाद के बढ़त वर्चस्व के समय में सब कुछ बेंच–बेसाह के दायरा में बा –

''ना जाने काहे खातिर
रोज रोज नया नया चेहरा
कीनेले बाजार से

सांझ खानि जवन चेहरा पहिन के
बइठल रहन दरबार में
सबेरे गइलीं त पइलीं
सांझवाला चेहरा उतार के
राखि देले बाड़े ताखा पर।''

देखे के बात बा कि एहिजा कवि 'दरबार' लिखत बा। 'दरबार' के खास अर्थ में प्रयोग बा। कवनो प्रभुता वाला आदमी के तरफ संकेत बा। काहे कि साधारण आदमी दरबार में हाजिर हो सकेला, दरबार लगा ना सके। त साफ बात बा कि प्रभुता वाला आदमी ही अनेक चेहरा राखे के बाजार बना बढ़ा रहल बा। अब त सत्ता के शीर्ष प विराजमान जे बा, ऊ मुखौटा के राजनीति के बढ़ावा दे रहल बा। मुखौटा बिकवा रहल बा।

साहिर लुधियानवी के गीत जवन 'दाग' सिनेमा में बा आ जेके लता जी गवले बाड़ी, इयाद आ रहल बा –

''जब भी चाहे नई दुनिया बसा लेते हैं लोग
एक चेहरे पे कई चेहरे लगा लेते हैं लोग।''

जितेंद्र जी के अउर कविता ह ''मामा के सपनवा हरजाई''। ई ''कविता'' पत्रिका के अक्टूबर 2002 वाला अंक में छपल बा। जरूर पढ़े के चाहीं।

हरजाई शब्द प ध्यान चल जात बा। एकरा के लोग हरजाही भी कहेला। इयाद आवत बा– ''चुप रहु, चुप रहु बेटी हरजाही.. ।'' एहिजा त मामा के 'सपना' के हरजाई कहल जाता बा। का सपना बा मामा के? कि सपना में बैलन के घुघुर घंटी के टुनटुन उनका कान में पड़त बा। पंजाब से कीनल दुदंता दूगो बाछा के जोड़ी आखिरी जोड़ी ह उनका दुआर के। के। नाद, खूंटा सब खाली हो जात बा। सब सून। ट्रेक्टर के गांव में अवाई आ बैलन के उड़ास लाग जाता। मामा एह बदलाव के कबूल

नइखन कर पावत। पशुप्रेमी मन उनकर उदास रहत बा। खेती किसानी में जब नया नया एह सब चीजन के प्रवेश होत बा, पारंपरिक कुलि चीज बदले लागत बा। मामा जस अनेक लोग एह बदलाव के झट ना समझ पावत बा आ ना संकार पावत बा। समय आ मन के एही दोहमच के ह ई कविता। जइसे राधा के कान में किसन के बंसी के धुन बजेला, वइसहीं मामा के कान में बैलन के घंटी। आ इहो बात बा कि जइसे दुअरिका गइल किसना जी मथुरा ना लौट पावेलन, अइसहीं अब बैलो ना अइहें स फेर मामा के दुआर पर। बाकी मामा के मन में एगो हाहाकार उठ रहल बा।

''मामा जब सपनालें
उनका कान में बैलन के घंटी टुनटुनाला।''

एह कविता से ई बात समझे के चाहीं, आ समझे के खूब जगह बा कि जितेंद्र जी के पासे एह किसान जगत के नीक बूझ समुझ बा। एह कविता में 'बैलन के गरदन के लोर' छुवे के बात बा। मामा खातिर सबसे बड़ सुख रहे खा के बइठल बैलन के सींघ सुहुरावल आ ओकनी के गरदन के लोर छुअल। ई कवनो भावुकतापूर्ण वर्णन ना ह। एह दुनिया के जे जानकार बा, ऊ खूब महसूस कर सकत बा। 'बैलन के गरदन के लोर' प जब ध्यान गइल त बुझाइल कि कवि के मन खूब रमल बा एह में। एहिजा लोर के मतलब आंसू ना ह। बैलन के गरदन के नीचे जवन चाम झुलत रहेला, ओकरे के 'लोर' कहल जाला। एह शब्द के प्रयोग खातिर भी ई कविता इयाद राखे के चाहीं। देखल जाए-

''खाइ के बइठिहे स बैल
मामा ओहनी के सींघ सुहुरइहें
ओकनी के गरदन के लोर छुअल
उनुका जिनगी के सब से बड़ सुख रहे
आज उहे बैलन के खूंटा उदास बा।''

बैलन के 'गरदन के लोर के' जगह आज कुछो रखीं, आदमी के लोर, मनुष्यता के लोर। कतना जरूरी बा ई छुअन। मामा के सपना में जवन घंटी बाजत बा, ऊ कवनो ना कवनो रूप में हमनी सब के सपना में बाजत बा। आसान ना होला कवनो चीज के विदा कहल। हमनी के पीढ़ी के कवि केशव तिवारी के एगो कविता-संग्रह के नांव ह 'आसान नहीं विदा कहना।'

❑❑

❍ गिरीडीह कालेज, गिरीडीह

नेपाल भाषा आयोग के अध्यक्ष भोजपुरी में शपथ लीहने

भाषा आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष डॉ गोपाल ठाकुर आ सदस्य डॉ पुष्कर राज भट्ट शपथ ग्रहण कके पद भार ग्रहण कइले बा लोग। प्रधान न्यायाधीश हरिकृष्ण कार्की सर्वोच्च अदालत में एगो समारोह के बीच भाषा आयोग के दूनों पदाधिकारियन के शपथ ग्रहण करवनी। भाषा आयोग के अध्यक्ष डॉ ठाकुर अपना जातीय आ सामुदायिक पोशाक धोती कुर्ता बंडी गमछा पहिर के अपना मातृभाषा भोजपुरी में शपथ लेहनी त सदस्य डॉ भट्ट दौरा-शुरुवाल कोट-ढाकाटोपी पहिर के नेपाली में शपथ लेहनी।

एह अवसर पर भाषा आयोग के सदस्यगण उषा हमाल, डॉ अमर राज गिरि, अमृत योज्जन तामांग गोपाल प्रसाद सर्राफ(गोपाल अश्क) तथा कृष्ण प्रसाद न्योपाने के साथे आयोग के सचिव जयराम अधिकारी, उपसचिव कमला पाण्डेय समेत आयोग के सभे कर्मचारी लोग उपस्थित रहे। साथे सर्वोच्च अदालत के मुख्य रजिस्ट्रार लालबहादुर कुंअर आ रजिस्ट्रार नारायण प्रसाद पंथी समेत सभे कर्मचारी लोग उपस्थित रहे।

शपथ ग्रहण का बाद अध्यक्ष डॉ ठाकुर एवं सदस्य डॉ भट्ट के भाषा आयोग में निवर्तमान कार्यवाहक अध्यक्ष उषा हमाल आ अन्य सदस्य गण के साथे सचिव अधिकारी समेत उहाँ के सभे कर्मचारी लोग एगो छोट कार्यक्रम कके उहाँ लोग के सोवागत कइलस। सोवागत कार्यक्रम का बाद दुनू जने पदबहाली कके आपन आपन कारयाभार ग्रहण कइलस लोग। एह अवसर पर भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार ढेर गद गद रहल।

❑❑

दिनेश पाण्डेय

सुधि

अजहुँ आँखि भरि आइल हो रामा,
फिर सुधि आइल।

रात साँवरी, गुजगुज जोन्हीं ।
मूनत–खुलत नयन–जुग–मोन्हीं,
पल न साँस सरियाइल हो रामा,
फिर सुधि आइल।

सिरसिर पौन मौनबन्ह टूटल,
बिखरल सबद, तान–लर छूटल।
सकल साध छरियाइल हो रामा,
फिर सुधि आइल।

दुल्लम दरस, परस तन जारे,
तिसना बेग न थमत सम्हारे।
लुफुत–कुफुत जरियाइल हो रामा,
फिर सुधि आइल।

कब छिति छोर सफेदी पसरल,
एक परेवा ऊपर ससरल।
अगिन शोर कढ़ि आइल हो रामा,
फिर सुधि आइल।

❑❑

❍ संचार नगर, आदमपुर,
टावर 9/204
पो– खगौल, पिन ८०११०५
पटना, बिहार

रीना सिन्हा

चउखट

सबकर दुआरी पर रहत रहे
एगो काठ के दरवाजा/दु पल्ला वाला उ दरवाजा से
आवे जाए के खातिर/कोनो रोक टोक ना रहे।
दूनो पाट ओकर /सबका खातिर/खुलल रहत रहे।

उ दरवाजा त साधारने रहे,
बाकी उ काठ के दरवाजा के साथे
एगो आउर चीज रहत रहे,
दरवाजा से लागल ए गो चौखट।

चौखट खाली लकड़ी ना रहे
उ रहे घर के मर्यादा के लकीर,
उ चौखट रहे घर के संस्कार के पहरेदार।
उ चौखट के माने रहे
कुछ नियम/जे बूढ पूरनिया
लोग के सिखावन रहे,
जे बड़ बुजुर्ग लोगन के समझावन रहे।

चाहे लईकी चाहे लईका
सबका खातिर रहे उ चौखट,
ओकरा पार करे के हिम्मत/केकरो ना रहे।

अब समय बीतल /नया जमाना आइल,
हमनी के माडर्न हो गईनी/चौखट देहाती हो गईल।

दरवाजा त अबहूँ बाटे/बाकी उ चौखट हमनी के
भूला गईनी /गाँव घर से निकल के
भुला गईनी अप्पन संस्कार।

ओही के नतीजा आज/हमनी के भोग तानी,
बेटियन के जान गवावे के पड़ता
लईकन सब कुरसता जा तारन स।

एकरा पहिले के आउर देर दोखे
हमनी के आपन जिनगी में,
उ काठ के चौखट /फेर लगावे के पड़ी।

चौखट संस्कार के,/चखट मर्यादा के,
आ चौखट बूढ पूरनिया लोग के/सिखावल बात के।

चौखट लगावे के पड़ी/चौखट लगावे के पड़ी
❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

ऊ बचपन के दिन बड़ा ईयाद आवेला

मीनाधर पाठक

के अइसन होई कि आपन लड़कपन ना ईयाद करत होई! हमके बुझाला कि जइसे–जइसे उमिर ढलान पर आवेले बालपन ढेर ईयाद आव. ला। काहें से कि जिनगी के एगो लमहर हिस्सा लइकन के पालन पोषण आ घर–परिवार, दुनियादारी निभवला में कब हाथे से सरक जाला, पते ना चलेला। पता तब चलेला जब जिनगी की रेस में भागत–भागत घुटना दुखाए लागेला। आँखी से तनी धुआँह देखाई देबे लागेला। आ पुरुआ–पछुआ बेयारि देहि में लागल सुरु हो जाला। तब तनी ठहरि के अपना के देखल जाला त पता चलेला कि आधा से ढेर उमिर हाथे से निकल गइल बा। केश पाकि गइल बा आ काल अपनी कलम से माथे पर कइगो लकीर खींच दिहलेबा। तब बड़ा ईयाद आवेला लड़कपन, कि हम कहाँ से चलनी आ कहाँ पहुँचि गइनी! सुतत–जगत बचपन के लोग–बाग, गाँव–जवार, संगी–साथी, खेल–कूद, आ चचिआउत, ममिआउत, फुफुआउत भाई बहिन, सब मन परे लागेलें। तब सबके फोन नंबर जोहि–जोहि बतिआवल जाला। ओकरी बाद एकहगो कथा–कहानी मन परे लागेला आ तब अकेले में हँसि–रो लिहल जाला।

आजुकाल हमरो साथे ईहे हो रहल बा। तनिको पलखत मिल जाता, त मन लइकई के दिन आ संगी साथी की ओर भागता। आजु बड़की दीदी के बड़ी ईयाद आवत रहल ह त चाचा घरे फोन क के उनकर नंबर मंगनी हँ आ फोन मिला दिहनी हँ। बड़की दीदी, माने बड़का बाबूजी के बेटी, जिनका से लड़त–झगड़त हमार बचपन बीतल। उनका से छिन–छिन में झगड़ा हो खे आ छिन–छिन में मेल। सोचते रहनी कि ओने से फोन उठि गइल।

"हेल्लो !"

उनके बोली सुनते हम चीन्हि गइनी। एतना बरिस बाद हम उनके बोली सुनत रहनी। हमार आँखि लोरिया गइल।

"कौन हैं जी! बोलते क्यों नहीं हैं ?"

"हम हईं दीदी !" हमार बोली सुनते ओने सन्नाटा पसरि गइल।

"के ...!" धिमाहे आवाज आइल।

"हम हईं, चीन्हा, भुला गयिलू?" हमार आवाज तनि काँपि गइल आ ओने फेरु सन्नाटा ब्याप गइल।

अबले हमार आँसु आँखिन से बिलग के गाले पर सरकि आइल रहे। तबे ओने से हमार नाँव लिहली दीदी।

"हँ, हमहीं हईं।" कहनी हम।

ओकरी बाद रोवल–गावल आ शिकवा–शिकायत के दौर चलल। जब सब शिकायत खतम हो गइल तब सुरु भइल एकहगो कथा–कहानी आ हँसत–हँसत पेट दुखा गइल। एक घंटा ले बतिअवला के बाद फेरू जल्दी फोन कइल जाई, ए वादा के साथ फोन रखा गइल।

दीदी से बतिया के केतना कुल बाति मन परि गइल, बाकिर एगो बाति, जवन रहि–रहि के हँसावत बिया, ओकर चरचा क रहल बानी।

ओ समय हमार उमर ढेर होई त आठ–नौ बरिस के होई, एसे बेसी ना होई। समय रहे साँझ के। हम आम्मा की कमरा की दुआरि पर बइठ के पढ़त रहनीं। फुआ हमरी छोटकी बहिन के बझावत रहली। का जाने काहें ऊ रहि–रहि के रोवत रहे। तबे बड़की दीदी अपनी छोट बहिन के ले के घुमावे खातिर निकलत रहली। ऊ हमके देखली आ हम उनके। ऊ आँखि से इशारा कइली कि ''चलु बहरा।'' बाकिर हमके त अम्मा पढ़े के बइठवले रहली, कइसे उठीं हम! उनके बहरा जात देखि के हमार पढ़े से मन उचटि गइल रहे बाकिर डरन किताबे में मुड़ी गड़वले रहनी।

दीदी के जात देखि के फूआ आपन जान छोड़ावे खातिर छोटकी बहिन के हमके थमा के कहली कि, "ले जा तनी एकरो के बहरा घुमा ले आवा, का जानी काहें रोवतिया, चुपाते नइखे। बाकिर अपनी दुआरे पर रहिहा, अउरी कहीं मत जइहा।"

हमके नीमन बहाना मिल गइल। अपना से सात साल छोट बहिन के कोरा ले के झट दे दोगहा के चउकठ लांघ के बहरा निकल गइनी कि कहीं पाछे से अम्मा हमके देख के बोला ना लें कि "ले आवा लइकनी के हमके द, आ तू पढ़ा बइठ के।"

दुआर पर चाचा लोग नीबी के नीचे बइठ के अपनी संघतिया लोग की साथे तास खेलत रहे। बड़का भइया नादे पर गाई, बैल के छाँटी चलावत रहलें।

हम भागत चाचा लोग की लगे पहुँच के साँस लिहनी। अब अम्मा कुछ ना क सकत रहलीं। ना त ऊ चउकठ लांघ बहरा निकलिहें आ ना त जोर से आवाज दे के हमके बोलइबे करिहें। ई सोचि के हम निश्चिन्त हो गइनी। अब हम चारू ओर देखनी, दीदी नापाता रहली। चाचा लोग अपनी खेल में बिलाइल रहे।

बहिनिया हमरी कोरा में अबो रहि–रहि के रोवत रहे। हम ओहिजा एने से ओने घूम के ओकरा के चुप करावे लगनी। तबे देखनी कि मोती की दुआरे पर पकड़ी तरे

लइकन के भीड़ लागल रहे आ ओही भीड़ में सबसे पाछे दीदी मुँह ऊपर कइले ठाड़ा रहली आ सब लइका कुल ऊपर देखत रहलें। मन में उत्सुकता जागल आ फूआ के दीहल हिदायत भुला के हमहूँ ओने बढ़ि गइनी। पहुँचनी त पता चलल कि पकड़ी पर करिया मुँह वाला बानर परिवार बयिठल रहे। खूब मोटहन के भारी–भरकम बानर रहे, मुँह एकदम करिखा। एगो बनरियो रहे जवन अपनी बच्चा के लिहले दूसरी डाल पर बइठल रहे।

पेड़ पर त बानर रहबे कइलें बाकिर ओकनियो ले ढेर बानर निचवा रहलें। एगो बाति ई,कि गाँव में पहिले से जवन बानर कुल रहे ऊ ललमुँहवा रहे आ ई लोग श्याम मुखी रहे। एहीसे ई लोग गाँव के बानर प्रवृत्ति लइका लोग के ध्यान अपनी ओर आकर्षित कइले रहे आ टोला के सब बनरा–बनरीय हमार मतलब कि बालक–बालिका लोग आ के पकड़ी तरे ठाड़ हो गइल रहे।

हँ, त कुछ लइका लोग माटी के धेला बीन–बीन ओकनी के मारे लागल। एक दू बेर त बनरा इग्नोर कइलस बाकिर ई लोग ना मानल त दाँत किटकिटा के देखावे लागल। ओकरी करिया मुँह पर दाँत मोती जइसन चमकत रहे। अब नीचे खेला सुरु हो गइल रहे। ई लोग ढेला मारें आ ओकर दाँत देखि के चिल्ला के भागें। बनरा फेरु से जा के बनरी लगे बइठ जा। लइका फेरु धेला मारें। ऊ फेरु दाँत किटकिटावे आ ई लोग फेरु माई–दादा करत भागें। हमहूँ कोरा में बहिन के लिहले कई बेर भगनी आ फेरु लवटि के अइनी। ए भगमभाग में के कहाँ भागत रहे, कुछ पता ना रहे। जेकरा जवन राहि मिले, धा ले। बहिन रोवत रहे कि गावत रहे, दीदी केने भगली, केने लुकइली आ लवटि के केने ठाड़ भइली, हमके कुछ पता ना रहे। काहें से कि हमहूँ बानरे के खेल में शामिल हो गइल रहनी आ खूब आनंद में मगन रहनी।

जब धेला मारत–मारत उबिया गइल लोग तब कुच्छु नया करे के उछाह में एगो लमहर के लाठी ले आइल लोग आ देखते–देखत ऊ बनरा की चुतर में खोद दिहल लोग। अब की बेर बनरा खूब जोर से खउखियाइल। सब लोग मुड़ी पर गोड़ ध के भागल। जेकरा जहाँ जगहि मिलल, लुका गइल। हमहूँ चाचा लोग की लगे भागि के ठाड़ हो गइनी।

देखनी, त फेरु सब लइका लोग झाँकि–झाँकि देखल आ जब बनरा के पेड़ पर आराम से बयिठल देख लिहल त फेरू से एक–एक क के सब लोग निकलि आइल।

ओने लइका लोग के खेल चरम पर रहे, एने चाचा लोग के। ए लोग के बीच बहुत कम दूरी रहे बाकिर सब अपनी–अपनी खेल में एतना गहिरे ले समाइल रहे कि ना त चाचा लोग के लइकन के हो–हल्ला सुनात रहे ना लइका कुल के ए लोग के डर रहे।

खैर...! हमहूँ धीरे–धीरे जा के ओलोग की भीड़ में शामिल हो गइनी। अब देखनी त थोड़ी दूर पर दीदी बखार की लगे सुरछित जगहि देखि के ठाड़ रहली कि बनरा दउरावे त झट दे ऊ बखारि के पीछे लुका जाँसु। सोचनी कि हमहूँ उनकी लगे चलि जाईं बाकिर हमरी आ उनकी बीच में लइका लोग के पूरा झुण्ड रहे, एसे हम उनकी लगे जाए के बिचार त्याग दिहनी आ ऊपर देखे लगनी।

बदमाशियों के हद्द होला! ढेला ले त ठीक रहे बाकिर अब लाठी से बनरा की चुतरे में खोद–खोद के ओकरा के हेरान कइले रहे लोग। अबकी बेर लाठी ले के जइसे ई लोग तानल, ऊ दांत कटकटात धम्म–धम्म एक डाढ़ि से दुसरे आ दुसरे से तीसरे...! अब त लाठी डंडा फेंकि के सभे भागल। हमहूँ घर की ओर भगनी। हमार घर तनी लामे रहे। बाकी सब एने–ओने लुका गइल आ हम भागते में ध इरा गइनी। तीसरी डाल के बाद बानर सीधे हमरी कान्हे पर कूदल आ एगो जोरदार तमाचा खींच के दिहलस। हम ओहिजा छितरा गइनी। सगरो ब्रहमाण्ड नाचे लागल। आँखी की आगे अन्हार हो गइल आ ओही अन्हारे में लुत्ती अइसन कुछु चमके लागल। हमरी हाथे से छूटि के बहिन कहाँ ढिमिला गइल रहे, हमके कुछ होश ना रहे।

जब होश आइल तब हम घर में रहनी बाकिर आँखि खुलते जोर से घूमटा आ गइल आ उबकाई सुरु हो गइल। कई दिन ले मुँहे अनाज ना पड़ल, काहें कि कुच्छु पेटे जा त उल्टी हो जाउ। का जाने क दिन बाद हम ठीक भइनी। बाकिर अब ऊ घटना आ ओ बानर के हाथे के गरुआई, सब हमके मन परि गइल रहे, रहि–रहि के हमरा हँसी छूटत रहे। अकेले में हँसल पागलपंथी के निशानी होला आ घर में सब हमके पागल बुझत रहे। ओघरी हमके बुझाइल रहे कि बनरा अपनी हाथे ना, कवनो लोहा की हाथे मरले रहे तबे हमरी आँखि के आगे दिन अछइते राति हो गइल रहे। अब सोचतानीं त हमके बानर आदमी से ढेर समझदार बुझाता। काहें कि ऊ कई बेर डेरवा के भगवला के प्रयास कइलस बाकिर लइका लोग अति क दीहल आ अइसन अति कइल लोग कि सजा एगो निर्दोष के मिलल बाकिर देखल जा त हमहूँ ओकरी नजर में दोसिए रहनी, काहें से कि भीड़ के हिस्सा त हमहूँ रहबे कइनी आ जब भीड़ के हिस्सा रहनी त निर्दोष कइसे भइनी! सजा त मिलहीं के रहल।

बचपन के ईयाद आ बचपन के लोग उम्र की ढलान पर मीलि जाला त मन–मस्तिष्क सब ऊर्जा से भरि जाला आ। बलकपन अपने आप में समृद्ध होला आ जब–जब ईयाद आवेला, जिनगी के समृद्ध क देला।

❑❑

❍ **कानपुर, उ0प्र0**

केशव मोहन पाण्डेय
साहित्य संपादक

भोजपुरिया स्वर में चइता के लहर

चइता परेम के पराकाष्ठा के प्रस्तुति हऽ। परेम में मिलन, बिछुड़न, टीस, खीस के प्रस्तुति ह। जिनगी के अनोखा पल के अनोखा भावन के अभिव्यक्ति के प्रस्तुति ह। बिहार आ उत्तर–प्रदेश में चइत महीना में गावे वाला गीतन के चइता, चइती चाहे चइतावर कहल जाला। चइता में मुख्य रूप से चइत माह के वर्णन त रहबे करेला, ई श्रृंगार रस में वियोग के अधिकता वाला लोकगीत हवे। गायिकी में चइता के 'दीपचंदी' चाहे 'रागताल' में गावल जाला। कई जने एहके 'सितारवानी' चाहें 'जलद त्रिताल' में गावेले। भले आधुनिकता के डिजिटल लाइट में चइता के चमक मद्धिम हो गइल बा, बाकिर आजुओ भोजपुर, औरंगाबाद, बक्सर, रोहतास, गया, छपरा, सिवान, देवरिया, कुशीनगर, गोरखपुर से चलत जहवाँ भोजपुरी के सचका सपूत बाड़े, चइता के लहर उठबे करेला। लोग एह लहर के लहार में मह. फिल जमाइए लेला। सचहूँ, चइता चित्त से जोड़ेला।

जइसन कि सभे जानते बा, भारत में चइत के बरिस के पहिलका महिना कहल जाला। बरिस के पहिलका महिना भाइला के नाते एकर बहुते महातम बा बाकिर गीतनों के कारने एकर महत्ता बढ़ जाला। फागुन के लहरदार गीतन के बाद चइत के उमसत मौसम में बिरह के वर्ण्य–विषय पर आधारित भोजपुरिया लोक–मानस में चइता के धून से मन कहीं अउरी उजझ जाला। मौसम में झनक बढ़े लागेला आ खेतन में रबी फसलो पाक के झाझर नियर बाजे लागेला। एह बेरा किसान लोग खेतन के सथवे खरिहानन में ढेर लउके ला लोग। एह कूल्ह अवसरन पर चइता के टेर से मन फेर होखे लागेगा।

अगर ध्यान से देखल जाव त सोंझे बुझा जाला कि ऋतु पर आधारित गीतन में जन–मानस पूरी तरह से तरंगित आ उन्मादित दिखाई देता। फगुआ के बाद चइता एकर एगो अदभुत नमूना ह। कजरी आदि त बड़ले बा। चइत के महिना में गावे के कारने एहके चइता कहल जाला। अपना भोजपुरिया क्षेत्र में एके कई जगहे 'घाँटो' कहल जाला। ई मगही में 'चइतार' आ मैथिली में 'चइतावर' के नाम से जानल जाला। चइता के बारे में कहल जाव कि एहमे सबसे अधिका मीठास, रस आ कोमलता रहेला, त कतहूँ से तनीको झूठ ना होई। चइता के एगो गीत में प्रकृति के साथ के उदाहरण देखीं –

मोती के मउनी जइसन तीसी पाके,
सोनवा जइसन मटर छिमी से झाँके,
गेहुँवा पर चढ़ल ललइया, हो रामा,
मोरा अँगनइया।
फुदुक चहके ले गौरैया, हो रामा,
मोरा अँगनइया।

चइत माह के बदलाव के ऋतु के रूप में जानल जाला। पेड़न से पुरान पतई गिर गइल रहेला आ नवागत से पेड़न पर रौनक रहेला। प्रकृति में चारू ओर नयापन से नया उल्लास लउकेला। एही महीना में राम जी के जन्मोत्सव मनावल जाला, से चइता में ओकर वर्णन त होखबे करेला, राधा–कृष्ण के बिरह के वर्णन भी होला। हमरा बुझाला कि राम नवमी चइते में अइला के कारने एकर प्रभाव चइता में भी लउकेला। एह गीत के पहिलका पंक्ति के सथवे हर स्थाई पंक्ति में 'हो रामा' के अलाप कुछ अइसने लागेला। कहल जाला कि चइता में छंद के ना, लय के कमाल होला। गायक लोग के मानल जाव त ई पढ़े से अधिका सुने के गीत ह। एह के गायिकी के कलाकारी त ई ह कि एहमें ढोलक के थाप आ झाल के झंकार पर हुकार होत रहे के चाही। एकर असर आदमीए–जन ना, चिरई–चुरूंगो पर पड़ेला। चइता सुनते मन के घूटन परा जाला। चइता लोक मन के गीत होखला के सथवे शास्त्रीय संगीत के विधा ह। चइता के सामूहिक गायिकी के विलक्षण दृश्य होला। जब ई झलकूटिया रूप में गावल जाला त गायक लोग के सामान्यतः दू दल हो जाला। पहिलका दल एक–एक पंक्तियन के गावेला त दूसरका दल ओकरा स्थाई टेक के बेर–बेर दोहरा के स्वर के ऊँच करत रहेला। देखीं –

रामजी जे लिहनी जनमवा हो रामा
चइत महिनवा।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय जी अपना 'लोक साहित्य की भूमिका' में कहले बानी कि चइता के दूगो प्रकार होला–झलकुटिया आ साधारन। झलकुटिया माने जब गावे वाला लोग झाल कूट कूट के, बजा–बजा के गावे लें। एह चइता से सुर के मधुरता, मादकता के सथवे जोशो सामने आव. ला। अब साधारन चइता ऊ ह, जवना के केहू विशेष आदमी गावेले। चइता में मिलन होला, विरह होला। ईहा आनन्दो बा त पीड़ा के सथवे तड़पो बा। ईहवा रामजी के जनम के उठाह बा

त महावीर के अवतारो के कहानी बा। प्रकृति के सुन्दरता बा त प्रकृति के उमसत रूप के दरदो बा। चइता परेम के गीत ह। एहमें संभोग श्रृंगार के कहानी राग–सुर में कहल जाला। एकरा वर्णनन के विषयो विविध बा। कही सुरूजदेव के उगलो के बाद चादर तनले आलसी पतिदेव के जगवला के कथा रहेला त कहीं दाम्पत्य जीवन के राग–रंग आ नेह–कलह के कहानी रहेला। कही पदरेसी पति के ना अइला के दरद रहेला, –

पीपर पात झरि गइले हो रामा
पिया नाही अइले।

आधुनिक विद्वान लोग चइता के दू गो रूप बतावेला– चइता आ चइती। एह आधार पर चइती स्थाई आ ठहराव से गावल जाला जवना में गावत द्द्ररी टाँसी के प्रयोग ना कइल जाला, चइता में कइल जाला। चइता के पुरुष प्रधनता में गावल बतावल जाला त चइती के स्त्री प्रधनता के। मूल रूप से दूनो के गायिकी कला में अंतर होला।गावे के केहू गावे बाकिर जेकर जवन भाव रही ओही लगले नामकरण होला। इहो कहल जाला कि चइता एक छंद के होला आ ओमे एक पंक्ति प्रमुख होला बाकिर चइती तीन आ चार छंद के होला आ ओमे सभ पंक्ति प्रमुख होला। वइसे शास्त्रीयता पर एकर विभक्ति प्रमाणिक नइखे। ऊँहा खाली 'चइता' बा। देखीं –

झीनी चुनरिया में लउके गोल नैना
रातरानी तहे–तह सजावेली रैना,
छछने मन जइसे पनछुइया, हो रामा,
मोरा अँगनइया।

समग्रता में देखल जाव त चइता में कहीं ननद–भउजाई के कवनो पनघट पर केहू के छेड़खानी कइला के वर्णन रहेला त कहीं ग्वालीनन के मटका फोड़त कृष्ण के वर्णन। कई बेर चइता में वसंत के सौंदर्य आ फागुन के मस्ती के वर्णनो मिल. ला।

प्रकृति के वर्णन के सथवे कई बेर संभोग श्रृंगार के सरस वर्णन लउके ला। टिकोरा आ कचनार के वर्णन एकर सुन्दर उदाहरण बा। वर्णन त सगरो मिलेला बाकीर भाव के परदा लागल रहेला। देखीं ना –

अइहें पियवा त धरेब भर अँकवारी,
कोइलासिए ना रही बारी के बारी,
सोचि के मदन मन धधइले हो रामा,
पिया नाहीं अइले।

चइत माने मधुमास के दिन। एह समय में अपना गाँवन–देहातन में फसिलन के पकला के, फसिलन के कटला के आ खरिहाने पहुँचला के चर्चा रहेला। अपना गाँवन में एह मधुमास के दिन में चइता गावे के पुरनका परंपरा भले आज बदल गइल बा, बाकिर आजुओ कुछ लोग बा जे हमरा टोला के फुलगेना संत के परंपरा के अदालत भाई के बहाने आगे बढ़ा रहल बा। आजुओ चइता गावे के पुरनका पर परा जीअत बा।

साँचे ह कि जब चइता के लय में ढोलक आ झाल के संगत मिलेला त सुने वाला के मन झनझना उठेला। समय के बवंडर में उधियात आज रोटी–रोजगार जोहत लोक–परंपरा देश के सीमा से निकल के विदेशो में पहुँच रहल बा बाकिर चिं. तिंत रूप में। चिंता अपना परंपरा के मेटला के। चिंता रोटी के बहाना के। चिंता नाम के दौर में काम के डुबला के।

चिंता के त चिता कहले जाला। जब अपना परंपरा, अपना संस्कृति, अपना लोक–जीवन पर ग्रहण लागे लागी त मन के सगरो मीठास माहुर नियर हो जाई। हम सभके अपना मान–मरजाद के सथवे अपना लोक–रीति, लोक–परंपरा के बचवला के, सहेजला के, सँवरला के उद्यम करत रहे के चाहीं। अपना कूवत भर अपना लोक–गायकन के संरक्षण करत रहे के चाही आ समय–समय पर लोक–उत्सवन के गवाह बन के, असरा आ सहारा दे के, कान में अँगुरी डाल के, सगरो चिंता–फिकिर के भगा के गावत रहे के चाही –

कोसिला घरे अइले रघुराई, हो रामा,
बाजे बधाई।
धनि दशरथ धा के दरसन चाहे,
अन्तर–नयनन से परसन चाहें,
बलि जाले देखि मुसकाई, हो रामा,
बाजे बधाई।

लोकगीत चइता के चइतन्यता के आधारो पर ई निखटके कहला जा सकता कि आपन लोक–संस्कृति अति समृद्ध ह। समृद्धि के आँके–मापे खातिरे सही, जब कबो, कवनो कारण से एक बेर मुड़के अपने लोक–जीवन के देखीं, त सहजे बुझा जाई कि भोजपुरी के लोक जीवन के जइसन लोक–साहित्य, लोक परम्परो केतना समृद्ध ह।

हम आपन बाति कहीं तऽ चइता धून हमार सबसे प्रिय धून हऽ। एह लोक–धून के सहारे हम कइगो गीत लिखले बानी। कुछ तऽ एह लेख के उदाहरणे में प्रयुक्त हो गइल बा। लोक–धून के रस में गजबे के स्वाद होला। ऊ स्वाद कवनों बनाने जीभ पर फिरात रहे, इहो लोक–धुन के समृद्धि के बहाना बा।

❑❑

❍ राजपुरी, नई दिल्ली

धरती के बचावे खातिर जन भागीदारी आज जरुरी बा

लाल बिहारी लाल

दुनिया में पर्यावरण के तेजी से छति होत देख के अमेरिकी सीनेटर जेराल्ट नेल्सन पहिला बेर 7 सितंबर 1969 के घोषणा कइले कि 1970 के बसंत में पर्यावरण पर राष्ट्रब्यापी जन साधारण प्रदर्शन कइल जाई। उनकर मुहिम रंग ले आइल आ ए मुहिम में 20 लाख से अधिक लोग भाग लेलक । ए मुहिम के समर्थन में जानलमानल फिल्म आ टी.वी. के अभिनेता एड्डी अल्बर्ट पृथ्वी दिवस के निर्माण में अहम भूमिका निभवले। यही कारण बा कि उनकर जन्म दिन 22 अप्रैल के अवसर पर 1970 के बाद से हर साल 22 अप्रैल के दिन विश्व पृथ्वी दिवस मनावल जाला । एक्टर एल्वर्ट के टी.वी.शो ग्रीन एकर्स में भूमिका के खातिर भी जानल जाला । 141 देशों के पहल पर 1990 में 22 अप्रैल के दिन दुनिया के हर कोना में विश्व स्तर पर पर्यवरण के मुद्दा उठावल गइल जे में फेर से पुनः चक्रीकरण के प्रयास के उत्साहित कइल गइल। आ 1992 में ब्राजील के शहर रियो दी जेनेरियो में संयुक्त राष्ट्र संघ के पहल पर आयोजित कइल गइल जे में ग्लोबल वार्मिग आ स्वच्छ उर्जा के प्रोत्साहित करे पर बल देहल गइल। सन 2000 में इंटरनेट के सहयोग से दुनिया के हर कार्यकर्ता लोग के एगो मंच पर जोड़े में मदद मिलल जे से ई मुद्दा ग्ला. बल हो गइल। वर्ष 2000 में 22 अप्रैल के दिन 500 समूह 192 गो देश के करोड़ो लोग हिस्सा लेलक। एकरा बाद हर साल ई प्रक्रिया चलती रही। सन 2007 में पृथ्वी दिवस के अवसर पर अब तक के सबसे बड़का आयोजन भइल । जे में लगभग हजार से जादा स्थान पर जइसे– कीव,युक्रेन, कानवास, बेनजुएला,तुवालु,मनिला, फिलीपिंस, टोगो, मैड्रीड ,स्पेन, लन्दन, और न्यूयार्क के करोड़ो लोग एह में हिस्सा लेलक । विकास के एह अंधी दौड़ में पेड़ के अनाधुन कटाई हो रहल बा,वातावरण में कार्बन मोनो अक्साइड, कार्बन डाईआक्साइड, सल्फर ,सीसा, पारा आदि के साथ –साथ कल–कारखानों के सहयोग से धुआं आ कचरा, कृषी में कीटनाशक के ढेर प्रयोग आदी से धरती की बाहरी आ अंदर के दशा काफी खराब हो रहल बा आ प्रदूषण के मार से पानी आ हवा दूषित हो रहल बा, हरियाली सिमटल जात बा,वन्यजीवों पर संकट मड़राता के साथे–साथ मानव जीव पर भी संकट गहराइल जाता । दनिया में ई संकट उभरके सामने आ रहल बा । पृथ्वी के एह तरह दयनीय दशा और जीवों पर बढ़त संकट के सुधारे खातिर दुनिया के तमाम देश चिंतित बा । ओ में भारत भी एगो बा । महात्मा गांधी जी भी पर्यावरण पर चिंता ब्यक्त करत कहले रहले कि पृथ्वी रुपी माई के रक्षा करे खातिर सकारात्म कदम उठावल जरुरी बा । एकरा खातिर काफी प्रयास भी भइल पर बढ़त आबादी सब पर पानी फेर देत बा । प्रौद्योगिकी मंत्रालय से पर्यावरण एवं कृषी मंत्रालय से वन विभाग काटके तत्कालिन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व में 1986 में एगो अगल मंत्रालय पर्यावरण एव वन मंत्रालय के गठन कइल गइल । एकरे बाद जल संरक्षण,भूमि संरक्षण , वायु संरक्षण,वन संरक्षण आदि के खातिर काफी नियम बनावल गइल । तबहु पृथ्वी पर अवैध खनन जारी बा । एह के रोके खातिर सरकार आउर गति प्रदान करे खातिर अगल से पृथ्वी मंत्रालय के गठन कइले बा ताकि सख्ती से नियम पर अमल कइल जा सके।। तबही त एह माँ रुपी पृथ्वी के बचावल जा सकेला । वरना पृथ्वी के नष्ट होखे से कुलहन जीव जन्तु नष्ट हो जईहे। एकरा खातिर जरुरी बा कि जीव के एह संकट के समझल जाव आ हर मानव आपन –आपन फरज निभावे तबही पृथ्वी पर जीव बच पाई। जीव के कल्याण एही में छुपल बा । पृथ्वी को बचाने खातिर सरकारी प्रयास के साथे–साथ जन भागीदारी भी आज जरुरी बा ।

❑❑

❍ बदरपुर, नई दिल्ली

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी
डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

अपनइत

(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)

अध्यक्ष : **सरोज त्यागी** संयोजक : **जे.पी. द्विवेदी**

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/- संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।